सितम्बर-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०१७

इदन्नमम् का भाव,
सभी के अन्दर जब भी जागेगा।
पृथ्वी पर से बाल-कुपोषण,
छूमन्तर हो जायेगा।
ऐसे ही उपदेश दयानन्द,
निज ग्रन्थों में देते हैं।
करलो पर-उपकार तुम्हारा,
जीवन सफल हो जायेगा॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६६

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Sambhar masala
Chunky Chat masala
Shahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Dal Makhani masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११८
आश्विन कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १९३

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

०७

कोई भूखा न सोये

१८

अकर्मण्य को नहीं मिलता सुफल

September - 2017

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४	वेद सुधा
१२	राजभाषा वन्दन
१३	सच्चा शिक्षक
१५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१७
१६	प्रेरणा- पुरुषार्थ का सुफल
२२	मनुर्भवः
२४	कश्मीर की समस्या
२८	स्वास्थ्य- मधुमेह लक्षण एवं उपचार
२९	कथा सरित- जमीर, सत्य की ताकत
३०	सत्यार्थ पीयूष- राजा भी दण्डाधीन

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ | अंक - ०४

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

ईश्वर का प्रत्यक्ष अवबोधन

अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि।। - ऋग्वेद ८/१००/४

ऋषिः- इन्द्रः। देवताः- इन्द्रः। छन्दः- पादनिचृत्त्रिष्टुप्। **गतांक से आगे ....**

अब प्रश्न है कि ईश्वर क्या करता है, तो इस मंत्र में ईश्वर के तीन कर्मों का वर्णन है। पहला उत्पन्न करना, दूसरा पालन करना, तीसरा संहार करना। एक कर्म और है ईश्वर का, और वह है, कर्म-फल का विधान करना। यह चारों कर्म परमेश्वर के दो शब्दों में समाहित हैं, जो हैं 'जनिता' और 'विधाता'। 'जनिता' के रूप में ईश्वर उत्पत्तिकर्त्ता भी है, पालन-कर्त्ता भी संहारकर्त्ता भी। इस दृष्टि से वही एक ब्रह्मा भी है, विष्णु भी, और शिव भी। यह जो पौराणिक गाथाओं के आधार पर प्रदर्शित किया जा रहा है कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी और शिव जी तीन अलग-अलग कार्यों के लिये हैं, नितान्त भ्रममूलक है। वेद मंत्र तो स्वतः स्पष्ट कर रहा है- **'विश्वा जातानि अभि अस्मि मह्ना'** अपनी महान् सत्ता/सामर्थ्य से समस्त उत्पन्न सृष्टि में सब ओर से मैं व्याप्त हूँ, तथा **'आ दर्दिरः भुवना दर्दरीमि'** संहार (छिन्न-भिन्न) करने की शक्ति रखने वाला मैं समस्त भुवनों (सृष्टि) को अन्त में विश्लेषित कर देता हूँ।

वेदान्त दर्शन में महर्षि व्यास ने प्रथम सूत्र में **'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'** से ब्रह्म को जानने की जिज्ञासा व्यक्त की, तो दूसरे ही सूत्र में उनको स्थापित करना पड़ा **'जन्माद्यस्य यतः'** जिससे इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थित और प्रलय होती है, वही ब्रह्म है। वस्तुतः उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय अलग-अलग कार्य नहीं, एक ही वृहद् कार्य के तीन चरण हैं। एक 'ऋत' है, अटल नियम है, उसी के अनुसार सब कार्य हो रहा है। आत्मा जब इस पिण्ड में आया, तो गर्भस्थ यह एक मांस का लोथड़ा था। फिर इसका आकार बनता गया। यथा स्थान हर अवयव बनता गया। फिर जन्म हुआ। बहुत छोटा शरीर था, छोटे-छोटे हाथ, छोटे-छोटे पैर। आज ६०-७० वर्ष के हैं। हाथ-पैर कोई नये नहीं लगे। पर तब में अब में कितना अन्तर है। लेकिन एक दिन इन हाथ-पैरों में वह शक्ति नहीं रहेगी, तो क्या यह अच्छा न होगा कि हमें फिर से वही शक्ति मिले। इसी सारी प्रक्रिया-चक्र का नाम 'उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय-उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय चक्र' है। सब कुछ उसी एक परमात्मा के 'तप' तथा 'ऋत' और 'सत्य' पर आधारित 'यथा-पूर्व' हो रहा है। ईश्वर की महानता यह है कि अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्वक, व्यवस्थित रूप से सारे कार्य स्व-सामर्थ्य से करता चला आ रहा है, और करता रहेगा। और विशेषता यह है कि बनाये गये पदार्थों का वह पालन और अनुरक्षण भी उनमें व्याप्त होकर स्वयं कर रहा है। उत्पत्ति और विकास में नैरन्तर्य बना हुआ है, और इन सबके लिए वह किसी का आश्रित नहीं। इसी तथ्य को दर्शाता है, मंत्र का यह वाक्यांश - **'विश्वा जातानि अभि अस्मि मह्ना'।**

संहार के कार्य की दृष्टि से ईश्वर को मंत्र में 'दर्दिर' कहा गया है। 'दृ' धातु का अर्थ है, विदीर्ण करना, मिले हुए तत्त्वों को अलग-अलग करना। यह इसी प्रकार है जैसे ओवरहालिंग के लिए मोटरकार या मोटरसाइकिल के इंजन को पूर्णतया खोल डालना। मिस्त्री द्वारा सारा कुछ इंजन खुल जाने के पश्चात् अपने स्वरूप में नहीं रहता। यह एक प्रकार से इंजन का संहार है। पुनः उन्हीं कल-पुरजों की साफ-सफाई अथवा नवीनीकरण कर पुनः उसका संचयन और संयोजन कर इंजन को कार्यरूप में ले आना, यही इंजन की 'उत्पत्ति' या पुनर्जीवन है। इस प्रकार संहार से ही उत्पत्ति है।

हर उत्पन्न हुए पदार्थ की एक आयु होती है। जिसकी आदि है, उसका उस रूप में अन्त निश्चित है। केवल अनादि ही अनन्त हो सकता है। अनादि सत्तायें तीन हैं- ईश्वर, जीव, प्रकृति। सृष्टि 'जातानि' (उत्पन्न हुई) है। सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता ईश्वर है। जिसके लिए यह सृष्टि रची गई है, वे जीवात्मायें हैं। जिससे सृष्टि की रचना हुई है, वह प्रकृति तत्त्व है। हम अपने ऊपर दृष्टि डालें। हमारे अन्दर जो आत्म-तत्त्व है वह अनादि है, किन्तु अल्पज्ञ है। इसके स्व-विकास (अर्थात् आत्म-विकास) के लिए यह

शरीर परमात्मा ने प्रकृति के तत्त्वों से बनाकर प्रदान किया है। **आत्मा अजन्मा है, अतः अमर है। शरीर जन्मा है, अतः उसका अन्त निश्चित है।** यह अंत इस शरीर का संहार है, इसलिए कि आत्मा को पुनः नया शरीर आगामी विकास के लिए मिल सके। शरीरान्त जब होता है, तो जीव अलग हो जाता है, और शरीर के भिन्न-भिन्न तत्त्व कारण रूप में अपने-अपने तत्त्वों में मिल जाते हैं, यथा आग्नेय अंश अग्नि में, वायव्य वायु में, पार्थिव पृथिवी में, आपः जल में, और आकाश-आकाश में। फिर इन्हीं पंचतत्त्वों से पुनः एक नव-शरीर गठित होकर जीवन को कर्मानुसार मिल जाता है। यही विश्लेषण और संश्लेषण अर्थात् विघटन और पुनः संयोजन की समस्त प्रक्रिया है 'दर्दरीमि', और इस क्रिया का कर्त्ता है 'दर्दिरः'। **जैसे हर शरीर की एक आयु है, उसी प्रकार प्रत्येक सृष्टि की भी एक आयु है। मानव शरीर की मानक आयु वेद के अनुसार एक सौ वर्ष वा उससे अधिक है। सृष्टि की मानक आयु चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष है।** शरीरान्त पर पंचभौतिक शरीर के तत्त्व अपने-अपने तत्त्वों में लय हो जाते हैं। उसी प्रकार सृष्टि भी अपने अन्त (प्रलय) काल में कारण रूप हो जाती है। पुनः प्रलयावस्था के उपरान्त परमेश्वर के तप से ऋत के आधार पर '**यथापूर्वमकल्पयत्**' सृष्टि का प्रगटीकरण हो जाता है। कारणावस्था पुनः कार्यावस्था में आ जाती है। इस प्रकार संहार और सृजन का क्रम चलता रहता है। संहार न हो, तो सृजन भी नहीं। इसी तथ्य को उजागर करता है, मंत्र का अन्तिम भाग - '**आ दर्दिरः भुवना दर्दरीमि**' संहार करने की (कार्य से कारण रूप में लाने की) महती शक्ति रखने वाला मैं समस्त भुवनों (सृष्टि) को अन्त (प्रलय) में विश्लेषित कर देता हूँ। (प्रलयकाल उपरान्त पुनः सृष्टि-उत्पत्ति हेतु)।

मंत्र का जो महत्वपूर्ण अंग है, जो हमें अपने-अपने कर्तव्य का बोध कराता है, वह है- '**ऋतस्य प्रदिशः मा वर्धयन्ति**'। ऋत का प्रकृष्ट रूप से उपदेश करने वाले ऋताचारी मुझे बढ़ाते हैं/मेरा वर्धन करते हैं।

समझने की बात है कि प्रत्येक शरीर की जो आयु है, सो है। पर किसी को, यहाँ तक कि शरीरधारी को क्या हक है, कि वह शरीर को क्षति पहुँचाये, आयु को क्षीण करे अथवा शरीर का हनन करे। पहली बात यह कि शरीर को न शरीरधारी ने बनाया, न उस जीवात्मा ने जो शरीर के अन्दर है। शरीर को बनाने वाला, प्राणों के द्वारा उसको संचालित करने वाला तो एकमात्र परमेश्वर है, वही इसका मालिक है। **हमें तो सदुपयोग और आत्म-विकास के लिए यह शरीर मिला है।** तो हमारा कर्तव्य यह बनता है कि अपने तथा अन्य शरीरों की रक्षा करें, इनको पुष्ट करें। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि, स्वस्थ चित्त और स्वस्थ अन्तःकरण संभव है। यह स्वस्थ होंगे तो हमारे संकल्प चिन्तन, मनन, कार्य, व्यवहार सब स्वस्थ होंगे। तभी हमारे अन्दर समता और शांति होगी, विषमता और अशान्ति नहीं। तो इस शरीर की रक्षा करना, इसको पुष्ट और बलशाली बनाना, तथा इसके द्वारा धर्माचरण और श्रेष्ठतम कर्मों (यज्ञों) को सम्पादित करना एक प्रकार से ईश्वर का वर्धन है, क्योंकि यह शरीर है तो कलाकृति उसी कलाकार की। कलाकृति को बिगाड़ना, इसकी उपेक्षा करना, इसकी अवहेलना करना, इसको नष्ट करना अथवा इससे अधर्माचरण तथा पापकर्म करना एक प्रकार से कलाकार का अपमान करना है, उसके सम्मान में वृद्धि करना नहीं।

जो बात शरीर पर लागू होती है, वही सृष्टि पर। जिस सृष्टि को हमने नहीं बनाया, बनाने वाला ईश्वर है, तो हमारा क्या हक बनता है कि हम इस सृष्टि को बिगाड़ें, इसको क्षति पहुँचायें, इसमें विक्षोभ, अशान्ति उत्पन्न करें अथवा सृष्टि-नियमों के विपरीत व्यवहार या कार्य करें। इस सृष्टि में यदि हम व्यक्ति अथवा समष्टि रूप में हिंसा, घृणा, वैमनस्य, अत्याचार, अनाचार, शोषण, अन्याय, आदि को बढ़ावा दे रहे हैं, तो निःसन्देह है, न हम सृष्टि का वर्धन कर रहे हैं, न सृष्टा ईश्वर का। ईश्वर तो 'ऋत' है और 'सत्य' है। 'ऋत' और 'सत्य' के आश्रय से उसने सृष्टि की रचना की है। हम आश्रय ले रहे हैं 'अनृत' का और 'असत्य' का और लगे हुए हैं उजाड़ने में उसकी सृष्टि को। हम एक फूल बना नहीं सकते, पर हजारों-लाखों फूलों को उनके खिलते ही डाली से अलग करने में लगे हुए हैं। हम एक पशु पैदा नहीं कर सकते, पर प्रतिदिन लाखों पशुओं का वध कर देते हैं। वन-वनस्पति को पैदा करना हमारे बस में नहीं, परन्तु वन-वनस्पतियों का सफाया करने में हम अग्रसर हैं। जल और वायु का निर्माण करने का सामर्थ्य हममें नहीं, परन्तु जल और वायु को दूषित करने और प्रदूषण फैलाने में हम आगे हैं। माँगने पर परमात्मा हमें आनन्द देता है; बिना माँगे हम परमात्मा को अपने क्रिया-कलापों से दिन-दूने और रात चौगुने दुःख ही दुःख दे रहें हैं, और बनना चाहते हैं उसके भक्त, पाना चाहते हैं उसकी कृपा, उसका आशीर्वाद!

मन्त्र में परमात्मा इसीलिये कह रहा है-

'**ऋतस्य प्रदिश: मा वर्धयन्ति।**' ऋत को समझ कर ऋत का प्रसार-प्रचार दिशा-दिशा में करने वाले ऋताचारी ही मेरा वर्धन करते हैं। **ऋत का वर्धन ही मेरा वर्धन है, मेरी पूजा, मेरा अर्चन है।** ऋत का (अनृत का नहीं) वन्दन मेरा वन्दन है, ऋत का दर्शन मेरा दर्शन है।

सोचने की बात है, जिस परमात्मा का कोई आकार नहीं, जो असीम और अनन्त है, उसको कौन घटा-बढ़ा सकता है। वस्तुतः उसकी सृष्टि का अनुरक्षण और उन्नयन ही उसका वर्धन है। यह हम कर सकते हैं। १. उसके रचे हुये पदार्थों का सदुपयोग करके; २. सृष्टि के समस्त पदार्थों का अनुरक्षण करके, उनको और अधिक सजा-सँवार कर; ३. अविद्या, अज्ञान और अविवेक को दूर कर विद्या, ज्ञान और विवेक से सृष्टि को आलोकित करके; ४. ईश्वर के बनाये हुये पदार्थों से प्रेरणा लेकर अनुसंधान द्वारा सृष्टि-हित में नित्य नये आविष्कार कर, और ५. नास्तिकता और अधर्म का नाश कर स्वयं और मानव समाज में आस्तिकता और धर्म को जीवन का अंग बना कर। पर इसके लिये हमें ऋताचारी बनना होगा। ऋत के गुण और गुणी दोनों को समझ कर जीवन में उतारना होगा। ईश्वर अपनी सत्ता से तो चर-अचर सब में व्याप्त है, पर एक-एक मनुष्य के जीवन में जब ईश्वर कार्य और व्यवहार से गोचर होगा, तो यही होगा उसका वर्धन।

सृष्टि से संबद्ध अपने कार्यों को ईश्वर तो कर ही रहा है। हमारा भी उत्तरदायित्व बनता है कि सृष्टि को हम उसकी आयु से पूर्व अकाल-प्रलय की ग्रास न बनने दें। आणविक अस्त्र-शस्त्रों तथा परमाणु विस्फोटों के इस युग में, जब युद्ध-लिप्सा और तहस-नहस करने की प्रवृत्ति आतंकवाद की चासनी के साथ मुँह बाये खड़ी हो, सृष्टि संहार का खतरा और बढ़ जाता है। ऐसे में केवल ऋतज्ञः, ऋतपा और ऋताचारियों से ही यह उम्मीद की जा सकती है कि वे विनाश-लीला को रोककर सृष्टि को स्वर्ग (आनन्द-धाम) बनाने की चेष्टा करेंगे। तभी परमात्मा का हम यह कथन सार्थक कर सकेंगें- '**ऋतस्य प्रदिश: मा वर्धयन्ति:**'।

लेखक- महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती
साभार- वेद-स्वाध्याय-प्रदीपिका

❑❑❑

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए.

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

नर-सेवा से जीवन खिलता,
बढ़ता जग में मान।
इस सेवा के बल पर ही,
खुश होते हैं श्रीभगवान।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आत्म निवेदन

अँधेरे में जो बैठे हैं नजर उनपर भी कुछ डालो अरे ओ रोशनी वालो

जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए परमपिता परमात्मा ने समस्त साधन भी प्रदान किये हैं , पर वे सीमित हैं असीमित नहीं इसलिए उपदेश भी दिया है कि मिल बाँट कर खावें अकेले नहीं ऋग्वेद १०/११७/६ में आता है **'केवलाघो भवति केवलादी'** अर्थात् जो अकेला खाता है मानो पाप खाता है। **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'** का उपदेश भी यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में दे दिया। इसी आधार पर मानव सभ्यता का विकास हुआ। जो इस बाँटने, त्याग करने में विश्वास रखते थे वे देव कहलाये और जो इसके विपरीत केवल अपने स्वार्थ को जीते थे वे असुर कहलाये। प्राचीन ग्रन्थों में इन प्रवृत्तियों को समझाने हेतु एक कथा भी आती है। एक बार प्रजापति ब्रह्मा ने देवों और असुरों को दावत दी। असुरों के हठ के कारण उनको प्रथम खाने बिठाया। एक शर्त रख दी गयी। सभी के हाथ एक लकड़ी के सहारे कोहनी के ऊपर से लेकर पंजों तक इस प्रकार बाँध दिए कि हाथ कोहनी के जोड़ से मुड़ नहीं सकते थे। ऐसी स्थिति में प्रत्येक असुर जब भोजन सामग्री हाथ न मुड़ने की वजह से ऊपर ले जाकर अपने मुँह में डालने का प्रयास करता था तो वह अधिकांश बार मुँह में न गिरकर इधर-उधर गिर जाती थी। इस प्रकार वे असुर भूखे ही रह गए। अब बारी देवताओं की थी। उनके भी हाथ उसी प्रकार बंधन में थे। पर उन्होंने एक काम किया। वे आमने सामने बैठ गए तथा बजाय अपने स्वयं के मुँह में डालने के वे अपने सामने वाले व्यक्ति को खिलाने लगे और अंत में उन सभी ने भर पेट खाना खाया। इन दृष्टान्तों से जहाँ यह स्पष्ट होता है कि दूसरे को देने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए वहीं यह भी कि दूसरों की सहायता करने में स्वयं का भी लाभ होता है।

यही परम्परा मानवीय गुणों में परिलक्षित होती है। भारतीय संस्कृति में विशेष रूप से अन्यान्य प्रकारों से इसे गुम्फित किया गया है। **'सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु , सह वीर्यं करवावहै'** में यही भाव दिग्दर्शित होते हैं, तो **'भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी तूने रोटी खायी तो क्या'** इसी उदात्त भाव के सम्प्रेषण के लिए निर्मित है। कबीर का यह कथन 'साईं इतना दीजिये जा में कुटुम समाय, मैं भी भूखा न रहूँ साधू न भूखा जाय', आत्म संतोष, अपरिग्रह तथा परोपकार की ही शिक्षा दे रहे हैं। कुल मिलाकर बात यह है कि साधन यदि सीमित भी हैं तो भी उक्त भावों का समष्टि हित में प्रयोग समाज में किसी भी प्रकार के अभाव की पूर्ति कर देता है। महर्षि दयानन्द ने भी आर्य समाज के नवें नियम में यही विधान किया है- **'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए'**। यह किसी भी सामजिक व्यवस्था के लिए स्वर्णिम निर्देश है।

पर आज लगता है कि यह विरासत कहीं पीछे छूट गयी है अन्यथा **सबके लिए पर्याप्त भोज्य सामग्री की उपलब्धता के बाबजूद हर १० में से एक व्यक्ति को भूखा सोना न पड़ता**। जी हाँ कड़वी सच्चाई यही है। एक ओर तो अमीरों के कुत्ते भी दूध बिस्किट से धापे हुए हैं तो दूसरी ओर सर्वश्रेष्ठ कही जाने वाली जाति के लालों को एक दाना अन्न नसीब नहीं है। आपको याद होगा कि कुछ

वर्ष पूर्व बारां जिले में क्षुधापूर्ति के लिए किसी जंगली पौधे की घास की खीर खाने से कई मौतें हो गयीं थीं। आज जब हम malnutrition की चिन्ता कर रहे हैं जो विकट समस्या के रूप में हमारे समक्ष है तो ध्यान रखना होगा कि उसके अन्य प्रमुख कारकों में भूख प्रमुख है। पौष्टिक भोजन की बात तो बाद में आती है सर्व प्रथम भोजन भी उपलब्ध हुआ या नहीं यह देखना होगा। कुछ अध्ययनों के अनुसार विश्व में प्रति १० सेकण्ड में 'भूख' से एक मौत होती है। विश्वभर में प्रतिदिन २१००० व्यक्ति भूख तथा कुपोषण के कारण मौत के घाट उतर जाते हैं। (Hunger and world poverty) यह अत्यन्त भयावह है। आज जब कुपोषण से लड़ने के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिवस तथा सप्ताह का आयोजन करके इस ओर विश्व मानवता को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है वहाँ हम कहना चाहेंगे कि शरीर के उचित पोषण हेतु आवश्यक तत्त्व वाला भोजन मिले यह आवश्यक ही है परन्तु उससे भी पहले आवश्यक है कि पर्याप्त भोजन सामग्री मिले।

अगर भारत की बात करें तो जनसंख्या को मद्दे नजर रखते हुए इतनी भोज्य सामग्री का उत्पादन होता है कि सबकी भूख मिट सके, परन्तु ऐसा होता नहीं। 'केवलाघो भवति केवलादी' **की भावना का तिरोहित हो जाना तो इसका कारण है ही परन्तु दूसरा सबसे बड़ा कारण है भोजन की बर्बादी, जिसके लिए हम ही जिम्मेदार हैं।** एक समय था जब हमारे गुरुकुलों में बचपन से ही सिखाया जाता था तथा आदत डाली जाती थी कि भोजन के पश्चात् भोज्य सामग्री झूंठी न छोड़ी जाय, ऐसा करना पाप है। पर आज इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता। अपनी समृद्धि का दिखावा करने हेतु हम दावतों में ज्यादा से ज्यादा आइटम्स रखते हैं। खाने वाले की भूख तो सीमित होती है पर वह सारे आइटम्स चखना चाहता है नतीजतन बहुत सा खाना कूड़ेदान में जाता है। इस पर रोक होनी चाहिए। कहीं खाना कम न पड़ जाय और हमारी हँसी न उड़े यह सोचकर मेजबान भी १००-२०० व्यक्तियों का खाना ज्यादा बनवा लेता है, शरमा-शर्मी में हमारे देश में मेहमान परिवार से यह साफ-साफ नहीं पूछा जाता कि कितने लोग आयेंगे, अतः अनुमान से ही खाना बनवाया जाता है। मैंने अमरीका का एक निमंत्रण पत्र देखा जो इण्टरनेट के माध्यम से आया, उसमें साफ पूछा था कि कितने व्यक्ति कन्फर्म आयेंगे। भोजन सामग्री को बर्बाद करने से हो रही भयावहता को जिस दिन हम हृदय से समझ जायेंगे उस दिन शरमा-शर्मी पास भी नहीं फटकेगी।

मुझे अच्छी तरह याद है कि लगभग चालीस वर्ष पूर्व 'बुफे' दावतें नहीं होती थीं अथवा नहीं के बराबर होतीं थीं। मैंने सर्वप्रथम ऐसे आयोजन के दर्शन मथुरा के एक प्रतिष्ठित डॉक्टर साहब के यहाँ एक समारोह में किये थे। क्या खूब नजारा था। किसी को पता नहीं कि कैसे खाया जाय। आदत तो परोसगारी वाली पंगत की पड़ी थी जहाँ मनुहार पूर्वक खिलाया जाता था। यहाँ वह सब कुछ नदारद। भीड़ ज्यादा काउन्टर सीमित। नतीजा धक्का मुक्की, कुछ ने तो झूँठी प्लेट में ही परस लिया। अस्तु। बुफे का जिक्र हमने यहाँ साशय किया है। इस प्रकार के भोजन में मेजबान को और उसकी टीम को तो आराम ही आराम है इसमें कोई शक नहीं, न परोसगारी के लिए खूब सारे वालंटियर्स की आवश्यकता न मनुहार की, जिसमें प्रायः ठीक से मनुहार नहीं होने पर उलाहने व मेहमानों की नाराजगी का खतरा बना रहता था। अब यह कुछ नहीं। आराम से द्वार पर खड़े रह मेहमानों का स्वागत कीजिए, उपहार स्वीकार कीजिए और बतियायिये। उधर केटरर्स सब संभाल लेंगे। संभाल क्या लेंगे अगर कोई कमी बेसी होती है तो उनके लिए यह रोजमर्रा का काम है। इसलिए अब चिन्ता मेहमान के हिस्से में है कि उसे सब चीजें मिल जाएँ। अतः लाइनें अथवा धक्कम-धक्का ऐसे आयोजनों में आम दृश्य हैं मेहमानों के नाज नखरे बीते दिनों की बात हो गए। यह सब तो हुआ पर जो सबसे ज्यादा दुःखद है, वह है भोजन की बर्बादी। जो ऐसे समारोहों में कई गुना बढ़ गयी है। यद्यपि एक दृष्टि से देखा जाय तो ऐसे आयोजनों की विशेषता ही यही होनी चाहिए कि भोज्य सामग्री बिलकुल बर्बाद न हो। क्योंकि जिसको जो रुचे, जितना खा सके उतना ही भोजन ले। इसीलिए इसे 'स्वरुचि भोज' कहा जाता है। पर ऐसा होता नहीं है। आप क्या ले रहे हैं, क्या छोड़ रहे हैं इस पर किसी की निगाह नहीं है अतः मेहमान बेफिक्र हैं। वे कोई आइटम छोड़ना नहीं चाहते। सब कुछ चख लेना चाहते हैं अतः सब कुछ लेते हैं थोड़ा चखा, बाकी कूड़ेदान में फेंक देते हैं। एक तर्क मेहमानों का भी है जिसमें दम है, वह यह कि इतनी भीड़ में जैसे तैसे तो नंबर आया, अतः दोबारा की रिस्क नहीं ले सकते। अतः अनुमान से ज्यादा ही भोज्य सामग्री ले लेते हैं। अब बची तो कूड़ेदान में ही जायेगी। पंगत वाले भोजन में

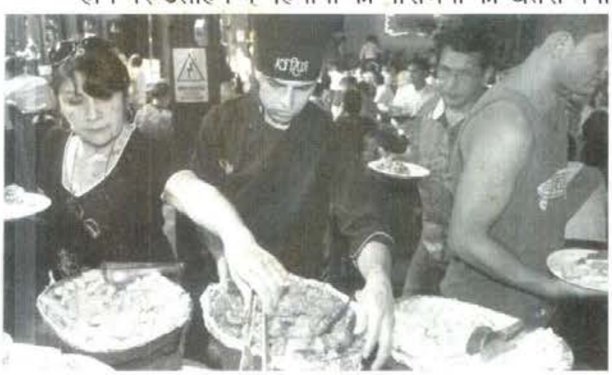

परोसना नियंत्रण में है, खाना खाना अथवा छोड़ना भी सबकी नजरों के सामने होने से कुछ शर्म भी रहती है, अतः भोजन की बर्बादी अपेक्षाकृत कम होती है। आज दिखावा भी पराकाष्ठा को प्राप्त है। बीसियों पचासों डिश बनायी जाती हैं। एक ही समारोह में भिन्न-भिन्न प्रान्तों के स्टाल लगे रहते हैं। अगर मेहमान नियंत्रण भी रखे, जितना खाना हो उतना ले तो कूड़ेदान में वेस्ट तो कम मिलेगा पर अनयूज्ड भोजन काफी बचेगा। अतः डिशों की संख्या पर नियंत्रण रहना चाहिए। कुछ पाठकों को यह अत्यन्त साधारण चर्चा लग सकती है पर यदि भुखमरी से होने वाली मौतों की संख्या आपके समक्ष होगी तो आपको यही सबसे महत्वपूर्ण चर्चा लगेगी। यही कारण है कि प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी ने भी 'मन की बात' में भोजन की बर्बादी पर चिन्ता व्यक्त की है और इसे गरीबों के प्रति अन्याय की संज्ञा दी है।

बर्बादी की शृंखला का एक और पहलू। होटलों में भी आप देखें तो कई एकाकी डिश इतनी बड़ी होती हैं कि एक व्यक्ति नहीं खा सकता। उदाहरण के तौर पर एक पिज्जा को ही लें। आधा पिज्जा तो आता नहीं अतः एक व्यक्ति भी, यह जानते हुए कि वह पूरा पिज्जा नहीं खा सकता, एक पिज्जा मंगाएगा तथा आधा खाकर बाकी फेंक देगा। एक दाल आदेशित करिए, एक डिश में तीन व्यक्तियों जितनी दाल आयेगी। बाकी तो फिकेगी ही। **आपका फेंका एक ग्रास एक व्यक्ति को भूखा सोने पर मजबूर कर देता है।** अतः छोटी मात्रा की ईकाई डिश आवश्यक है। अगर समारोहों में अनावश्यक दिखावा बन्द कर सीमित डिशें रखी जायँ, पर्याप्त सुव्यवस्था इस प्रकार हो कि व्यक्ति कितनी बार भी आराम से जाकर अपनी इच्छित सामग्री ले आ सके, संभागी दृढ़ संकल्पित हों कि वे यथा-संभव झूंठा नहीं छोड़ेंगे, छोटे साइज में डिशें तैयार करायीं जाय तो आप अनगिनत लोगों की तृप्ति के कारक बन सकेंगे। बंगलौर के कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के १० प्रोफेसर्स ने बंगलौर के ७५ विवाह समारोह स्थलों का छः माह तक अध्ययन किया और पाया कि वहाँ अच्छी गुणवत्ता वाले ८३२ टन भोज्य सामग्री की बर्बादी हुयी जिससे ढाई करोड़ व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया जा सकता था। इसी चिन्ता से बिहार की सांसद रंजीत रंजन ने एक प्राइवेट बिल प्रस्तुत किया है जिसमें ऐसे समारोहों में डिशों की संख्या, अनाप-शनाप खर्च पर रोक लगाने के प्रावधान हैं। अभी श्री रामविलास पासवान ने एक वक्तव्य में कहा कि जब दो इडली से काम चल सकता है तो चार इडली की प्लेट क्यों सर्व की जाय, अतः सरकार होटलों को भी निर्देशित कर रही है कि वे छोटी यूनिट में भोज्य सामग्री सर्व करें। पर जिस देश में आजादी के बाद से कुल १४ प्राइवेट बिल पारित हुए हों वहा रंजन का बिल कानून बन पायेगा इसमें शंका ही है दूसरे **ऐसे मामलों में कानून नहीं वरन् नैतिक जिम्मेदारी, वंचितों के प्रति दायित्व की भावना ही कार्य करती है।**

समाज में कोई भूखा न सोये यह समाज का ही दायित्व है। इस ओर सब तरह से प्रयास करने चाहिए। कुछ लोग कर भी रहे हैं। रोबिनहुड आर्मी के नाम से एक स्वयंसेवी संगठन होटलों तथा रेस्टोरेन्टों से बचा हुआ भोजन संगृहीत कर जरूरतमंदों में वितरित करने का अभियान चला रहा है। २०१४ में ६ मित्रों ने यह अभियान शुरू किया था। एक रात्रि में वे २०० लोगों को खाना खिला देते थे। आज इनके साथ ५०० स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं यह भारत के १३ शहरों में कार्यरत हैं। यहाँ तक कि इन्होंने पाकिस्तान में भी कार्य प्रारम्भ किया है। एक शेफ हैं जो सुबह होते ही सैंकड़ों लोगों का खाना बना उसे वितरित करने निकल जाते हैं। कुछ प्रतिष्ठान भी इस ओर ध्यान दे रहे हैं। कोच्ची में एक रेस्टोरेन्ट के मालिक ने अपने प्रतिष्ठान के आगे ४०० लीटर का फ्रिज रखा है। इस फ्रिज में कोई भी खाद्य सामग्री रख सकता है और कोई भी भूखा उसमें से खाना खा सकता है।

पर्याप्त उत्पादन के बाद भी देश में भूखे क्यों हैं इसका सर्वप्रमुख एक और कारण है भंडारण और वितरण में अत्यन्त लापरवाही, जिसे यदि मैं आपराधिक लापरवाही की संज्ञा दूँ तो संभवतः गलत नहीं होऊँगा। इस लापरवाही के चलते लाखों टन

अनाज बारिश की भेंट चढ़ रहा है। हर साल गेहूँ सड़ने से करीब ४५० करोड़ रुपए का नुकसान होता है। यह तो बीते सालों के आंकड़ें कहते हैं, जबकि इस साल तो अनाज सड़ने के इतने बड़े आंकड़े सामने आए हैं कि दाँतों तले अँगुली दबाने पर मजबूर हैं। हाल ही में इतना अनाज सड़ चुका है कि उससे साल भर करोड़ों भूखों का पेट भर सकता था, जो भ्रष्टाचार के गलियारों में पनपती लापरवाही की सीलन में सड़ गया। एक रिपोर्ट के अनुसार जयपुर में एक गोदाम में शराब रखने के लिए करीब ७० लाख टन अनाज बाहर फेंक दिया गया जिससे वह सड़ गया। उदयपुर के एक रेलवे स्टेशन पर टनों सड़ता हुआ अन्न हमने देखा है, यह किसकी लापरवाही है? भंडारण के ठोस व उचित प्रबन्ध करने ही होंगे। उचित मैंने इसलिए लिखा कि फूड एनेलिस्ट के रूप में अपने कार्यकाल में मैंने ऍफ.सी.आई. द्वारा उनके गोदामों से जो नमूने लेकर भेजे गए उनका विश्लेषण किया है। प्रायः ६० प्रतिशत अनाज इतना सड़ा हुआ होता था कि उसे फेंकने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते थे, वह अनाज जानवरों को भी खिलाने योग्य नहीं होता था। उस पर क्या कार्यवाही होती थी मुझे नहीं पता पर अनेक वर्षों में भी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। अनाज के सड़ने के संदर्भ में जनवरी २००८ में उड़ीसा के कोरापुट जिले के आरटीआई कार्यकर्त्ता देवाशीष भट्टाचार्य ने गृह मंत्रालय को एक आवेदन भेजा था। इस आरटीआई आवेदन का जो जवाब मिला, वह चौंकाने वाला था। मालूम हुआ कि बीते १० सालों में १० लाख टन अनाज बेकार हो गया। जबकि इस अनाज से छः लाख लोगों को १० साल तक भोजन मिल सकता था। सरकार ने अनाज को संरक्षित रखने के लिए २४३ करोड़ रुपये खर्च कर दिए, लेकिन अनाज है कि गोदामों में सड़ता रहा। खराब अनाज नष्ट करने के लिए भी सरकार ने २ करोड़ रुपये खर्च किए। जब गोदामों की क्षमता से दोगुना भार उन पर डाल देते हैं तो अनाज को सड़ने से किस तरह से बचाया जा सकता है। भले ही गोदामों में अनाज चूहे खाते रहें, अनाज पानी में पड़ा सड़ता रहे, लेकिन मजाल है कि वह अनाज भूख से तिल-तिल मरती जनता तक पहुँच जाए। सुप्रीमकोर्ट ने ठीक ही यह सवाल उठाया है कि यदि सरकार के पास इतना अनाज रखने का इंतजाम नहीं है तो वह उसे जरूरतमन्दों को क्यों नहीं बाँट देती। सुप्रीमकोर्ट के कड़े रुख के बाद सरकार ने आगामी छह महीनों में एपीएल परिवारों के लिए राशन की दुकानों से ३० लाख टन चावल और गेहूँ बेचने का फैसला किया।

FCI GODOWN USED TO STORE LIQUOR

अनाज पर आत्मनिर्भरता का दावा करने वाला भारत अनाज भंडारण के कुप्रबंधन की मार झेल रहा है, जिसके चलते टनों-टन अनाज प्रतिवर्ष सड़ जाता है। जिसका परिणाम देश में भुखमरी व महँगाई के रूप में हमारे सामने है। देश के ये हालात कोई नए नहीं हैं, आजादी के सात दशक बाद भी गरीबों के पेट की भूख लगातार बढ़ी, कुपोषण में भी बढ़ोत्तरी हुई, भुखमरी से मरने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ। देश के लिए चुनौतीपूर्ण सवाल ये है कि आखिर खाद्य सामग्री की सुरक्षा किस स्तर से हो रही है? खुले में पड़े लाखों टन अनाज को मात्र तिरपाल और चादरों के सहारे सुरक्षित रखने की समझ किसी नासमझी से कम नहीं है। मगर साल दर साल इसी तरीके से सब कुछ हो रहा है। देश में कुपोषण का प्रतिशत साल-दर-साल बढ़ रहा है। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्वभर में करीब पाँच साल से कम उम्र के २५ प्रतिशत बच्चों को पर्याप्त भोजन नहीं मिलता। शर्म की बात है कि इन बच्चों का सबसे बड़ा प्रतिशत भारत के हिस्से में आता है। आंकड़ों के अनुसार दुनिया में कुल भुखमरी के शिकार लोगों में ४० फीसदी लोग भारत के हैं।

भूख से हो रही मौतों के सन्दर्भ में वर्ष १९९६ में रोम में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। इसमें १८० देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने एक स्वर से कहा था कि भूख से हो रही मौतें बहुत ही शर्मनाक बात है। सम्मेलन में यह भी संकल्प लिया गया था कि सन् २०१५ तक विश्वभर से आधी भुखमरी मिटा दी जाएगी। किन्तु इस सम्बन्ध में कोई ठोस प्रयास अभी तक नहीं हुआ है। फलस्वरूप दिनोंदिन भूख से मरने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। उल्लेखनीय है कि इस समय दुनियाभर में ८० करोड़ ऐसे लोग हैं, जिन्हें दो जून की रोटी नहीं मिल पाती है। और अनुमान है कि २०१५ तक यह संख्या डेढ़ अरब तक पहुँच गयी है। इन में से लगभग ४० करोड़ लोग भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में हैं। यानी दुनिया में जितने भूखे हैं, उनके आधे भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में हैं। यह उस समय की बात है, जब इन देशों में खाद्यान्नों के अतिरिक्त भण्डार भी भरे पड़े हैं। तो फिर आम लोग भूख से क्यों मरते हैं? अन्न वितरण व्यवस्था में कहाँ कमी है और इसके लिए कौन जिम्मेदार है?

विश्वभर में प्रतिदिन २१ हजार लोग किसी जानलेवा बीमारी से नहीं, बल्कि भूख से मरते हैं। इस संख्या का एक तिहाई हिस्सा

भारत के हिस्से में आता है। भूख से मरने वाले इन २१ हजार में से १८ हजार बच्चे हैं। और इन १८ हजार का एक तिहाई यानी ६ हजार बच्चे भारतीय हैं। लेकिन क्या पिछले ७० वर्षों में देशभर में इस बारे में कोई चिन्ता की गई?

फीडिंग इंडिया के संस्थापक अंकित क्वात्र ने अन्न की उत्पादक से उपभोक्ता तक की यात्रा का विवरण देते हुए बताया है कि भंडारण तथा ट्रांसपोर्टेशन आदि की कुव्यवस्था के कारण चावल के १० दानों में से ६ कभी भी उपभोक्ता के पास नहीं पहुँच पाते। उनके अनुसार भारत में 'पोस्ट हार्वेस्ट लोसेस' लगभग १ लाख करोड़ रुपये का बैठता है जो कृषि को आवंटित कुल बजट का २० प्रतिशत बैठता है। अतः अगर हम चाहते हैं कि देश में एक भी बालक कुपोषित की श्रेणी में न आवे तो यह चाहत असाध्य तो नहीं परन्तु अत्यधिक कठिन होने से हर स्तर पर कड़े प्रयास और उन प्रयासों में सभी की भागीदारी चाहती है।

तकनीकी सहायता से सुरक्षित भंडारण की व्यवस्था व सप्लाई चेन को अनुकूलित करके 'पोस्ट हार्वेस्ट लोस' को न्यूनतम किया जाय। समारोहों में समृद्धि के दिखावे की अपनी अभिलाषा पर रोक लगाते हुए सीमित डिशों से युक्त आयोजन करें। होटल तथा रेस्टोरेन्ट खाने की छोटी यूनिट्स बनावें। झूठा भोजन छोड़ना पाप ही समझें। कोई भूखा न रहे इसे अपना सामजिक दायित्व समझें। तथा वंचितों के इस कथन को सदैव ध्यान में रखें ....

'अँधेरे में जो बैठे हैं नजर उन पर भी कुछ डालो, अरे ओ रोशनी वालो।'

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

□□□

उदयपुर विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल होने के नाते और इस वर्ष तो यहाँ की शान पिछोला झील तथा फतहसागर के अभी से लबालब हो जाने के कारण आमजन को तो अपने आकर्षण से खींच ही रहा है वहीं देवदयानन्द की कर्मस्थली, सत्यार्थप्रकाश जैसे महनीय ग्रन्थरत्न की प्रणयन स्थली होने के नाते आर्यजनों को विशेषरूप से यहाँ आने व सत्यार्थप्रकाश-भवन, नवलखा महल दर्शन हेतु प्रेरणा दे रहा है। अवसर है-

२०वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

४ से ६ नवम्बर २०१७ नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर में

कृपया अभी से मित्रों तथा परिवारीजनों का रिजर्वेशन करा लें, तथा सुव्यवस्था हेतु हमें सूचित करें।

- निवेदक -

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(0294) 2417694, 09829063110, 09314535379
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

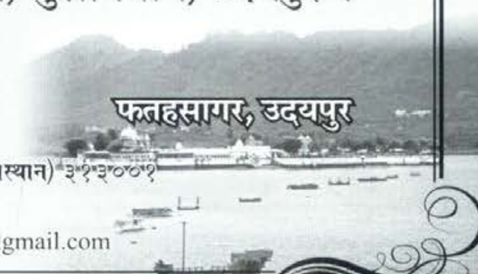

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

नवलखा महल स्थित चित्रदीर्घा का पूर्वावलोकन किया। यह सम्पूर्ण विश्व को अपने वेद ज्ञान से प्रकाशित करने वाले संन्यासियों के सूर्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एवं आर्यसमाज की महान् विभूतियों एवं भारतवर्ष के शीर्ष क्रान्तिकारियों के कार्यों एवं उनके जीवनोपलब्धियों से हमें अवगत कराती है। इस चित्रदीर्घा के निर्मातागण, प्रबन्धकगण तथा दिग्दर्शक सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

- परमेश्वरनाथ मिश्र (न्यायविद् अधिवक्ता), कलकत्ता उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायालय, भारत

आर्यावर्त्त गैलेरी नव पीढ़ी के लिए सहेजी हुई आपकी अमूल्य धरोहर है जो भारतीय संस्कृति एवं अन्य महान् सपूतों, वीरों एवं महापुरुषों की संक्षिप्त परिचय कारक है। बच्चों के साथ एक सुखद अनुभव के साथ दुर्लभ ज्ञान प्राप्त हुआ। धन्यवाद

- जयश्री कासरे, उज्जैन

"राजभाषा वन्दन"

करते हैं तन-मन से वन्दन,
जन-गण-मन की अभिलाषा का।
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का,
आराधन अपनी भाषा का।
यह अपनी शक्ति सर्जना के,
माथे की है चन्दन रोली।
माँ के आँचल की छाया में,
हमने जो सीखी है बोली।
यह अपनी बँधी हुई अंजुरी,
ये अपने गन्धित शब्द सुमन।
यह पूजन अपनी संस्कृति का,
यह अर्चन अपनी भाषा का।
अपने रत्नाकर के रहते,
किसकी धारा के बीच बहें।

हम इतने निर्धन नहीं कि,
वाणी से औरों के ऋणी रहें।
इसमें प्रतिबिंबित है अतीत,
आकार ले रहा वर्तमान।
यह दर्शन अपनी संस्कृति का,
यह दर्पण अपनी भाषा का।
यह ऊँचाई है तुलसी की,
यह सूर-सिन्धु की गहराई।
टंकार चंद वरदाई की यह,
विद्यापति की पुरवाई।
जयशंकर की जयकार,
निराला का यह अपराजेय ओज।
यह गर्जन अपनी संस्कृति का,
यह गुंजन अपनी भाषा का।।

-सोम ठाकुर

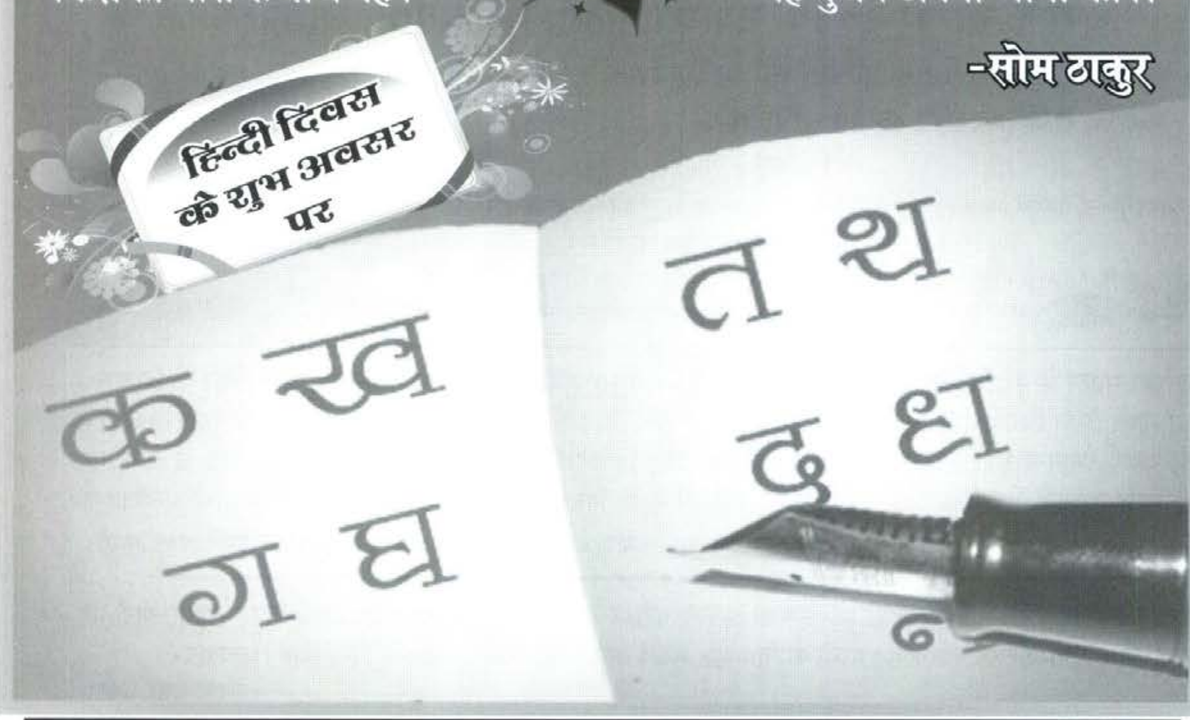

सच्चा शिक्षक

प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कहा है जन्म देने वालों से, अच्छी शिक्षा देने वालों को अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने तो बस जन्म दिया है, पर उन्होंने जीना सिखाया है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन का कहना है कि शिक्षक आप में रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा ज्ञान में प्रसन्नता अनुभव करना सिखाता है।

यह निर्विवाद है कि किसी के भी जीवन में सच्चा शिक्षक मिलना सबसे महत्वपूर्ण घटना है। श्री राम लक्ष्मण आदि को जन्म दशरथ ने अवश्य दिया पर उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने में विश्वामित्र की ही भूमिका सदैव स्मृत की जावेगी। अतएव समाज में शिक्षक को जीवन निर्माता के रूप में देखा जाता रहा है। आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व के निर्माता हैं तो समर्थ गुरु रामदास शिवाजी के जनक हैं। पर आज शिक्षक की भूमिका जीवन निर्माता की नहीं बल्कि जीवनयापन हेतु रोजगार दिलाने की योग्यता पैदा करने तक सीमित हो गयी है।

एक समय था जब चक्रवर्ती सम्राट का गुरु साधारण झोंपड़ी में रह कर प्रसन्न था। दो रोटी, दो कपड़े और विलासिता के

साधनों से रहित तपोवन के अतिरिक्त सब कुछ शिष्य को योग्य बनाने में निछावर करना उसे अभीष्ट था। वेतनवृत्ति न उसके लिए विहित थी न उसे उसकी चाह थी, न ही शिष्य को शिक्षा देने का समय निर्धारित था क्योंकि २४ घंटे उसे केवल यही कार्य था। पर आज स्थिति उलट है। शिक्षक वेतन भोगी है उसका सर्वाधिक ध्यान अपने वेतन तथा इसकी वृद्धि पर लगा रहता है। पढ़ाई के लिए घंटे निर्धारित हैं जो दिन में ६ घंटे से ज्यादा नहीं हैं उसमें भी अपवाद को छोड़कर बाकी पढ़ाना नहीं चाहते। यहाँ तक कि एक स्थानीय विश्वविद्यालय में जब यह निर्णय लिया गया कि क्योंकि प्राध्यापक समय से आते नहीं और जल्दी जाकर अपने प्राइवेट ट्यूशन सम्पन्न करना उनकी प्राथमिकता में रहता है तो उनकी उपस्थिति अनिवार्य कर दी जाय तो इसका विरोध करते हुए हड़ताल तक की गयी। तो आज शिक्षक का दायित्व व चरित्र और प्राथमिकताएँ बदल चुकीं हैं।

शिक्षक की प्राथमिकता रह गयी है कि सबसे पहले वह शहरी पोस्टिंग का इंतजाम करले ताकि वह व उसका परिवार आराम से रहे। सुदूर ग्रामीण इलाकों में भी ज्ञान का प्रकाश फैलाना उतना ही आवश्यक है वह इस विषय में भावुक होना नहीं चाहता। जिनकी ग्रामीण इलाकों में पोस्टिंग हो जाती है वह बुझे मन से अपनी ड्यूटी एक मशीन की तरह निभाते रहते हैं। ऐसे ही विद्यालयों के दृश्य आपने देखे हैं कि छात्र-छात्राएँ शोर मचाते रहते हैं और अध्यापक

कुर्सी पर बैठ कर ऊँघते रहते हैं और कई तो सामने टेबल पर पैर रख बाकायदा सो जाते हैं।

उत्तर प्रदेश में कामचोर अध्यापकों के सन्दर्भ में एक सर्वे किया गया। इंडिया नवोदय सरकारी संस्था के आंकड़ों को मानें तो यूपी में सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की शैक्षणिक प्रणाली सबसे ज्यादा खराब है। आंकड़ों को मानें तो यूपी में ५० प्रतिशत सरकारी शिक्षक पढ़ाने में कामचोरी करते हैं। संस्था ने ये आंकड़े बीते दिनों लखनऊ के तमाम शिक्षा अधिकारियों व प्रशासनिक अधिकारियों की मीटिंग में पेश किए थे।

गुजरात में भी सरकार शिक्षकों के रवैये से परेशान रही है। २०१५ में राज्य शिक्षा विभाग ने इस बारे में एक नोटिफिकेशन भी जारी किया था । शिक्षक दिवस पर हुए कार्यक्रम के दौरान

तत्कालीन मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल ने कहा था कि कामचोर सरकारी शिक्षकों को सबक सिखाने और सुधारने के लिए सामाजिक तौर पर दंडित किया जाएगा। राज्यपाल ओ.पी. कोहली ने सरकार का ध्यान सरकारी शिक्षकों में बढ़ते उस चलन की तरफ भी आकर्षित किया था जिसके तहत स्कूल में अपनी ड्यूटी सही से ना निभा कर शिक्षक छात्रों को निजी ट्यूशन के लिए बुलाते हैं।

ऐसे समय में अपवादस्वरूप ही सही ऐसे लोग मिल जाते हैं जो एक जुनूनी व्यक्ति की तरह शिक्षा बाँटने में लगे हुए हैं इनमें से एक हैं आदित्य कुमार। आदित्य कुमार २० वर्ष से अपनी साईकल पर निकल जाते हैं और दूरदराज के इलाकों में जाकर बच्चों को पढ़ाते हैं। इनका नाम ही साईकल गुरु पड़ गया है। ४० वर्ष से ज्यादा के होने पर भी इन्होंने अभी तक इसलिए शादी नहीं की कि वह इनके उद्देश्य पूर्ति में बाधक हो सकती है। आदित्य कुमार ने पूरे देश में गरीब बच्चों को शिक्षित करने का जो अभियान चलाया है, वह काबिलेतारीफ है। ये उसी जज्बे का कमाल है कि आदित्य का नाम 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड, गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' सहित २१ बार इंटरनेशनल लेवल पर दर्ज हो चुका है। आदित्य का संकल्प है कि जिन्दगी की आखिरी सांस तक शिक्षा का इसी प्रकार प्रचार करते रहेंगे।

आदित्य का जन्म फर्रुखाबाद के सलेमपुर में एक मजदूर परिवार में हुआ था। आप समझ सकते हैं कि उनके विद्यार्जन में कितनी कठिनाइयों का सामना उन्होंने किया होगा। क्योंकि आदतन वे दृढ़ निश्चयी रहे हैं अतएव डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर से उन्होंने विज्ञान में स्नातक परीक्षा पास की। उसके बाद उन्होंने निश्चय किया कि शिक्षा प्राप्त करने में जो कठिनाइयाँ उन्हें आयीं वे प्रयत्न करेंगे कि अन्यों को न आयें।

उन्होंने १९९५ में इस अभियान को शुरू किया जो धीरे-धीरे बढ़ता चला गया। इस दौरान उन्होंने ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कर पैसे जोड़े और झुग्गी झोपड़ी और रेलवे स्टेशन पर भीख माँगने वाले बच्चों को शिक्षित करने का काम करने लगे। धीरे-धीरे उन्हें सहायता मिलने लगी। मीडिया ने भी उनका साथ दिया, उनके पढ़ाये बच्चे अब अच्छी पोस्ट पर कार्य कर रहे हैं बकौल आदित्य वे भी उनकी सहायता कर देते हैं।

आदित्य कुमार गरीब बच्चों को शिक्षित करने के साथ ऐसे स्वयंसेवकों की बड़ी टीम बना रहे हैं जो गली-गली, गाँव, कस्बा, शहर में शिक्षा की अलख जगा सकें। आदित्य कुमार को प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने सम्मानित किया। इसके अलावा राज्यपाल रामनाईक भी उन्हें सम्मानित कर चुके हैं। आदित्य को विश्वास है कि उनकी मुहिम से देश में शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति आ जाएगी।

एक और शिक्षक अजय लोहान की बात करें जो अपना वेतन छात्रों पर खर्च कर देते हैं। नारनौंद (हरियाणा) के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में अजय लोहान का चयन गेस्ट टीचर के रूप में हुआ था। उनके पिता भी उसी विद्यालय में पढ़ाते थे। स्कूल के बच्चे वैसे ही थे जैसे एक ग्रामीण परिवेश के हो सकते हैं। परन्तु अजय की कल्पना थी कि उनका विद्यालय कान्वेंट जैसा हो और किसी भी क्षेत्र में अग्रणी रहे। उन्होंने अपने को इस उद्देश्य के लिए झोंक दिया। उनके साथियों ने भी साथ दिया। ५०० की संख्या वाले विद्यालय में अब १८०० से ऊपर विद्यार्थी हैं। विद्यार्थियों के पास किताबें स्टेशनरी नहीं हैं तो अजय अपनी जेब से दिला देते है, बच्चों में प्रतियोगिता की भावना जगाने के लिए वे अपनी जेब से खर्च करने में संकोच नहीं करते। २००१ से ही अजय भाषण, कविता लेखन, खेल, जनरल नॉलेज, डांस सहित सैकड़ों प्रतियोगिताओं का आयोजन करवा रहे हैं। कुछ साल पहले ही अजय द्वारा प्रशिक्षित टीम ने जिला स्तर पर आयोजित युवा संसद में पहला स्थान प्राप्त किया। उनके द्वारा पढ़ाए गए बच्चों ने पिछले ७ सालों से जिले में सरकारी स्कूलों में लगातार पहला, दूसरा व तीसरा स्थान हासिल कर कभी न टूटने वाला इतिहास कायम किया है। इसके साथ-साथ हर साल इनका परीक्षा परिणाम १०० प्रतिशत रहा है।

अजय लोहान पिछले १० सालों से क्लास में कभी भी कुर्सी पर नहीं बैठे हैं। क्लास में हमेशा खड़े रहकर पढ़ाने वाले अजय ने अपने लक्ष्य के बारे में बताते हुए कहा कि वे शिक्षा के दम पर राष्ट्रीय स्तर पर अपना व अपने गाँव का नाम रोशन करना चाहते हैं। वो अपने खर्चे से १० लड़कियों को भी पढ़ा रहे हैं।

शिक्षक दिवस के अवसर पर हम आदित्य, अजय जैसे शिक्षकों और उनके प्रयासों को नमन करते हैं।

यद्यपि महात्मा हंसराज एवं मलाला जैसे व्यक्तित्वों और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अवदान से पाठक गण भालीभाँति परिचित हैं परन्तु शिक्षक दिवस के अवसर पर इन्हें स्मृत न किया जाय तो कृतघ्नता होगी। महर्षि दयानन्द के निधन के पश्चात् लाहौर आर्य समाज ने महर्षि के स्मारक के रूप में डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना का निर्णय लिया। साधनों का बड़ा अभाव था।

मनीषी पंडित गुरुदत्त अहर्निश दान की अपीलों में जुट गए। ऐसे में महात्मा हंसराज ने अभूतपूर्व निर्णय लिया कि वे जीवन भर हेडमास्टर के पद पर बिना वेतन कार्य करेंगे। हंसराज जी के भाई ने भी त्याग में कोई कसर नहीं रखी, बल्कि यह कहा जाय तो ठीक ही होगा कि भाई के कारण ही हंसराज अपनी प्रतिज्ञा निभा पाए। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे अपनी आधी तनख्वाह ताजिंदगी हंसराज के परिवार को देंगे। महात्मा हंसराज के समर्पण के फलस्वरूप ही डी.ए.वी. आन्दोलन आज भारत में शिक्षा के प्रसार में अग्रणी है।

संक्षिप्त चर्चा मलाला की भी। केवल १७ वर्ष की उम्र में नावेल पुरस्कार विजेता युसुफजई मलाला का जन्म १९९७ में पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रान्त के स्वात जिले में हुआ। २००८ में तालिबान ने स्वात घाटी पर अपना नियंत्रण कर लिया। वहाँ उन्होंने डीवीडी, डांस और ब्यूटी पार्लर पर बैन लगा दिया। साल के अंत तक वहाँ करीब ४०० स्कूल बन्द हो गए। इसके बाद मलाला के पिता उसे पेशावर ले गए जहाँ उन्होंने नेशनल प्रेस के सामने वो मशहूर भाषण दिया जिसका शीर्षक था-'हाउ डेयर द तालिबान टेक अवे माय बेसिक राइट टू एजुकेशन?' तब वो केवल ११ साल की थीं।

१९ दिसम्बर २०१२ को तालिबानी आतंकी उस बस पर सवार हो गए जिसमें मलाला अपने साथियों के साथ स्कूल जाती थीं। उन्होंने मलाला के सिर में गोली मार दी। गंभीर रूप से घायल मलाला को इलाज के लिए ब्रिटेन ले जाया गया। यहाँ उन्हें क्वीन एलिजाबेथ अस्पताल में भर्ती कराया गया। देश-विदेश में मलाला के स्वस्थ होने की प्रार्थना की गई और आखिरकार मलाला वहाँ से स्वस्थ होकर लौटीं।

२०१२ सबसे अधिक प्रचलित शख्सियतों में पाकिस्तान की इस बहादुर बाला मलाला युसूफजई के नाम रहा। लड़कियों की शिक्षा के अधिकार की लड़ाई लड़ने वाली साहसी मलाला यूसुफजई की बहादुरी के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा मलाला के १६वें जन्मदिन पर १२ जुलाई को मलाला दिवस घोषित किया गया। शिक्षा तथा विश्व को साक्षर बनाने के जुनून के लिए शिक्षक दिवस पर इन तथा ऐसे सभी को नमन।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाबबाग

□□□

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (षष्ठ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ष		■	२ ध		■	३ अ		ति
४	ड़		■	५	०	■	६	न	
७ कि			■	८ नी		क		■	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो धर्म का लोप करता है उसे विद्वान् लोग क्या कहते है?
२. मृत्यु के पश्चात् साथ जो जाता है वह क्या है?
३. संसार में दूसरे का पदार्थ ग्रहण करना किसका कारण है?
४. पराजित को कभी क्या न करें?
५. स्वर्णकारों के लाभ पर कितना भाग 'कर' लगाना चाहिए?
६. राजनीति का एक नाम यह भी है?
७. राजाओं का राजा किसे कहा गया है?
८. ऊपर से नीचे झपट मारता है, इस प्रकार सेना को बनाकर लड़ावें, इस प्रकार का व्यूह क्या कहलाता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०७/१७ का सही उत्तर

१. वायु	२. नीतिशास्त्र	३. मूर्ख
४. लम्पट	५. न्यायाधीश	६. तेजोमय
७. तीन	८. अक्ष	

"विस्तृत नियम पृष्ठ २३ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०१७

पुरुषार्थ का सुफल

यह एक ऐसे इंसान की कहानी है, जो अपनी मेहनत और लगन के बलबूते एक भिखारी से करोड़पति बन गया। जहाँ कभी वह घर-घर जाकर भीख माँगा करता था, आज न केवल उसकी कंपनी का टर्नओवर ३० करोड़ रुपए है बल्कि उसकी कंपनी की वजह से १५० अन्य घरों में भी चूल्हा जलता है।

हम बात कर रहे हैं रेणुका अराध्य की, जिनकी उम्र अब ५० वर्ष की हो गयी है। उनकी जिंदगी की शुरुआत हुई बेंगलुरू के निकट अनेकाल तालुक के गोपासन्द्र गाँव से। उनके पिता एक छोटे से स्थानीय मंदिर के पुजारी थे, जो अपने परिवार की जीविका के लिए दान-पुण्य से मिले पैसों पर आश्रित थे। दान-पुण्य के पैसों से उनका घर नहीं चल पाता था इसलिए वे आस-पास गाँवों में जा-जाकर भिक्षा में अनाज माँगकर लाते। फिर उसी अनाज को बाजार में बेचकर जो पैसे मिलते उससे जैसे-तैसे अपने परिवार का पालन-पोषण करते।

रेणुका भी भिक्षा माँगने में अपने पिता की मदद करते, लेकिन परिवार के हालात यहाँ तक खराब हो गए कि छठी कक्षा के बाद एक पुजारी होने के नाते रोज पूजा-पाठ करने के बाद भी उन्हें कई घरों में जाकर नौकर का भी काम करना पड़ता। जल्दी ही उनके पिता ने उन्हें चिकपेट के एक आश्रम में डाल दिया, जहाँ उन्हें वेद और संस्कृत की पढ़ाई करनी पड़ती थी और सिर्फ दो वक्त ही भोजन मिलता था- एक सुबह ८ बजे और एक रात को ८ बजे। इससे वो भूखे ही रह जाते और पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते। पेट भरने के लिए वो पूजा, शादी और समारोहों में जाना चाहते थे, जिसके लिए उन्हें अपने सीनियर्स के व्यक्तिगत कामों को भी करना पड़ता। परिणामस्वरूप, वो दसवीं की परीक्षा में फेल हो गए।

फिर उनके पिता के देहान्त और बड़े भाई के घर छोड़ देने से, अपनी माँ और बहन की जिम्मेदारी उनके कन्धों पर आ गई। पर उन्होंने यह दिखा दिया कि मुसीबत की घड़ी में भी वे अपनी जिम्मेदारियों से मुँह नहीं मोड़ते।

और इसी के साथ वे निकल पड़े आजीविका कमाने की एक बहुत लंबी लड़ाई पर। जिसमें उन्हें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा, अपनी निराशाओं से जूझना पड़ा और धक्के पर धक्के खाने पड़े।

इस राह पर न जाने उन्हें कैसे-कैसे काम करने पड़े जैसे, प्लास्टिक बनाने के कारखाने में और श्याम सुन्दर ट्रेडिंग कंपनी में एक मजदूर की हैसियत से, सिर्फ ६०० रु. के लिए एक सिक्योरिटी गार्ड के रूप में, सिर्फ १५ रुपये प्रति पेड़ के लिए नारियल के पेड़ पर चढ़ने वाले एक माली के रूप में।

पर उनकी कुछ बेहतर कर गुजरने की ललक ने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा और इसलिए उन्होंने कई बार कुछ खुद का करने का भी सोचा। एक बार उन्होंने घर-घर जाकर बैगों और सूटकेसों के कवर सिलने का काम शुरू किया, जिसमें उन्हें ३०,००० रुपयों का घाटा हुआ।

उनके जीवन ने तब जाकर एक करवट ली जब उन्होंने सब कुछ छोड़कर एक ड्राइवर बनने का फैसला लिया। पर उनके पास ड्राइवरी सीखने के भी पैसे नहीं थे, इसलिए उन्होंने कुछ उधार लेकर और अपनी शादी की अँगूठी को गिरवी रखकर ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त किया।

इसके बाद उन्हें लगा कि अब सब ठीक हो जाएगा, पर किस्मत ने उन्हें एक और झटका दिया जब गाड़ी में धक्का लगा देने की वजह से उन्हें अपनी पहली ड्राइवर की नौकरी से कुछ ही घंटों में हाथ धोना पड़ा।

पर एक सज्जन टैक्सी ऑपरेटर ने उन्हें एक मौका दिया

और बदले में रेणुका ने बिना पैसे के ही उनके लिए गाड़ी चलाई, ताकि वो खुद को साबित कर सकें। वे दिनभर काम करते और रात-रात भर जागकर गाड़ी को चलाने का अभ्यास करते। उन्होंने ठान लिया कि 'चाहे जो हो जाए, मैं इस बार वापस सिक्योरिटी गार्ड का काम नहीं करूँगा और एक अच्छा ड्राइवर बन कर रहूँगा।' वो अपने यात्रियों का हमेशा ही ध्यान रखते, जिससे उनपर लोगों का विश्वास जमता गया और ड्राइवर के रूप में उनकी माँग बढ़ती ही गई। वे यात्रियों के अलावा हॉस्पिटल से लाशों को उनके घरों तक भी पहुँचाते थे। वे कहते हैं, 'लाशों को घर तक पहुँचाने और उसके तुरन्त बाद यात्रियों को तीर्थ ले जाने से मुझे एक बहुत बड़ी सीख मिली कि जीवन और मौत एक बहुत लंबी यात्रा के दो छोर ही तो हैं और यदि आपको जीवन में सफल होना है तो किसी भी मौके को जाने न दें।'

पहले तो वे ४ वर्षों तक एक ट्रेवल कंपनी में काम करते रहे उसके बाद वे उस ट्रेवल कंपनी को छोड़कर एक दूसरी ट्रेवल कंपनी में गए, जहाँ उन्हें विदेशी यात्रियों को घुमाने का मौका मिला। विदेशी यात्रियों से उन्हें डॉलर में टिप मिलती थी। लगातार ४ वर्षों तक यूँ ही टिप अर्जित करते-करते और अपनी पत्नी के पीएफ की मदद से उन्होंने कुछ अन्य लोगों के साथ मिलकर 'सिटीसफारी' नाम की एक कंपनी खोली। इसी कंपनी में आगे जाकर वे मैनेजर बने।

उनकी जगह कोई और होता तो शायद इतने पर ही संतुष्ट हो जाता, पर उन्होंने अपनी सीमाओं को परखने की ठान

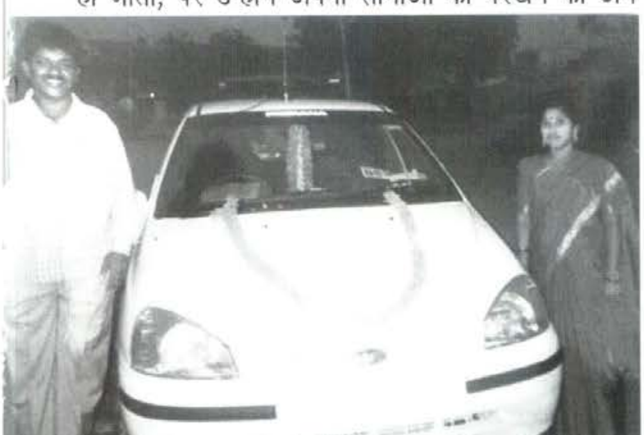

रखी थी। इसलिए उन्होंने लोन पर एक 'इंडिका' कार ली, जिसके सिर्फ डेढ़ वर्ष बाद एक और कार ली।

इन कारों की मदद से उन्होंने २ वर्षों तक 'स्पॉट सिटी टैक्सी' में काम किया। पर उन्होंने सोचा 'अभी मेरी मंजिल दूर है और मुझे खुद की एक ट्रेवल ट्रांसपोर्ट कंपनी बनानी है।'

कहते हैं न कि किस्मत भी हिम्मत वालों का ही साथ देती है। ऐसा ही कुछ रेणुका के साथ हुआ। जब उन्हें यह पता चला कि 'इंडियन सिटी टैक्सी' नाम की एक कंपनी बिकने वाली है। सन् २००६ में उन्होंने उस कंपनी को ६,५०,००० रुपयों में खरीद लिया, जिसके लिए उन्हें अपनी सभी कारों को बेचना पड़ा। उन्हीं के शब्दों में, 'मैंने अपने जीवन का सबसे बड़ा जोखिम लिया, पर वही जोखिम आज मुझे कहाँ से कहाँ लेकर आ गया।'

उन्होंने अपनी उस कंपनी का नाम बदलकर 'प्रवासी कैब्स' रख दिया। उसके बाद वे सफलता की ओर आगे बढ़ते गए। सबसे पहले 'अमेजन इंडिया' ने प्रमोशन के लिए रेणुका की कंपनी को चुना। उसके बाद रेणुका ने अपनी कंपनी को आगे बढ़ाने में जी-जान लगा दिया। धीरे-धीरे उनके कई और नामी-गिरामी ग्राहक बन गए, जैसे वालमार्ट, अकामाई, जनरलमोटर्स, आदि।

इसके बाद उन्होंने कभी पीछे पलट कर नहीं देखा और सफलता की ओर उनके कदम बढ़ते ही गए। पर उन्होंने कभी भी सीखना बंद नहीं किया। उनकी कंपनी इतनी मजबूत हो गई कि जहाँ कई और टैक्सी कंपनियाँ 'ओला' और 'उबेर' के आने से बंद हो गईं, उनकी कंपनी फिर भी सफलता की ओर आगे बढ़ रही है। आज उनकी कंपनी की १००० से ज्यादा कारें चलती हैं।

आज वे तीन स्टार्ट अप के डायरेक्टर हैं और तीन वर्षों में उनको १०० करोड़ के आँकड़े को छूने की उम्मीद है, जिसके बाद वो आईपीओ की ओर आगे बढ़ेंगे।

कौन सोच सकता था कि बचपन में घर-घर जाकर अनाज माँगने वाला लड़का जो १०वीं कक्षा में फेल हो गया था और जिसके पास खुद का एक रुपया भी नहीं था वह आज ३० करोड़ की कंपनी का मालिक है।

❑❑❑

साभार- अन्तर्जाल

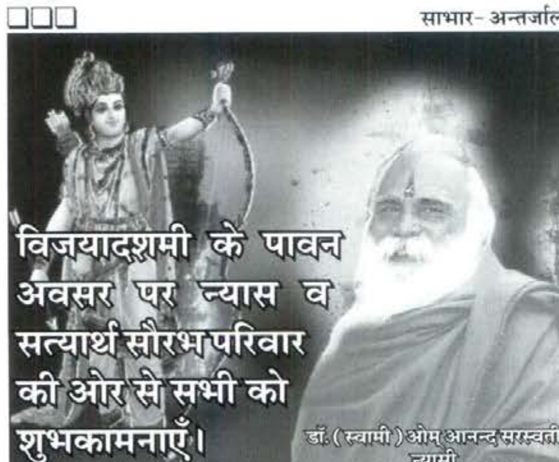

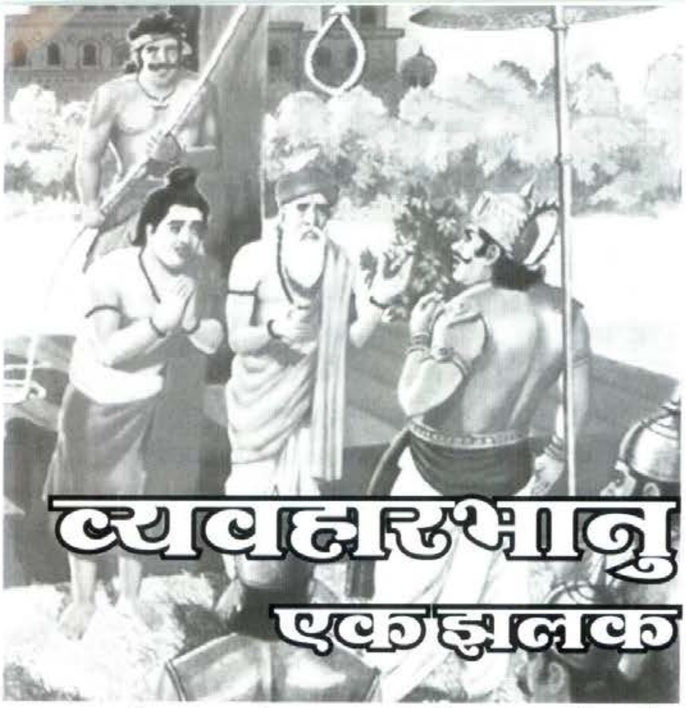

महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) के समस्त साहित्य में व्यवहारभानु पुस्तक (प्रथम संस्करण १८७६ ई.) का अलग स्थान है । यों तो स्वामी जी ने समस्त साहित्य गंभीर शैली में लिखा है, पर लगभग पचास पृष्ठ की यह एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसमें उन्होंने दृष्टान्तों, उदाहरणों, कहानियों, लोककथाओं आदि का खुलकर उपयोग करके इसे रोचक शैली में लिखा है। 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' वाली उस लोककथा का भी इसमें उपयोग किया गया है जिस पर हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१८५०-१८८५) ने बाद में 'अंधेर नगरी' (१८८१ ई.) नाम से एक नाटक भी लिखा था। महर्षि ने यह पुस्तक प्रश्नोत्तर, संवाद और व्याख्यान की मिश्रित शैली में मूलतः हिन्दी में लिखी थी, जो पर्याप्त लोकप्रिय हुई। हिन्दी में तो उसके अनेक संस्करण छपे ही, गुजराती, बांग्ला, उड़िया, मलयालम, संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं के साथ ही उसका अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ।

महर्षि ने इसे 'पठन-पाठन व्यवस्था की पुस्तक' कहा है। पठन-पाठन शब्द सुनते ही हमें विद्यालय की याद आ जाती है जहाँ शिक्षक मुख्य रूप से औपचारिक पठन-पाठन कराता है। हम यह भूल जाते हैं कि पठन-पाठन औपचारिक तो बाद में होता है, सबसे पहले अनौपचारिक होता है, जिसकी शुरुआत माता से हो जाती है, और फिर इसके सूत्र परिवार में पिता एवं अन्य सदस्यों, मित्रों, सम्बन्धियों, परिचितों-अपरिचितों आदि से होते हुए बहुत दूर तक जाते हैं। वास्तविकता यह है कि यह आजीवन चलता रहता है। इसलिए अपने विशिष्ट अर्थ में इसका महत्व औपचारिक पठन-पाठन से भी अधिक होता है। इस पुस्तक में महर्षि ने अनौपचारिक पठन-पाठन से सम्बन्धित छोटी-बड़ी बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है, और प्रसंगवश, यत्र-तत्र औपचारिक पठन-पाठन की भी चर्चा की है। अतः इस पुस्तक का सम्बन्ध हर बच्चे से और बच्चों के सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति से है। महर्षि के शब्दों में, उन्होंने इस पुस्तक में 'बालक से ले के वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के अर्थ व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया' है।

इस पुस्तक में यह बताया गया है कि परिवार में माता-पिता और संतान, विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी, प्रशासन में शासक और शासित, राजनीति में नेता और जनता, बाजार में क्रेता और विक्रेता आदि विभिन्न रूपों में हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, और इसके लिए जो गुण अपेक्षित हैं, उनका अर्जन कैसे किया जा सकता है। आज इन सभी सम्बन्धों में जो विकृतियाँ आई हैं, उन्हें देखते हुए इस पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है।

माता-पिता और आचार्य के दायित्व

संतान को योग्य बनाना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं। यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकता है जब माता-पिता और आचार्य तीनों अपने-अपने दायित्वों का सम्यक पालन करें। इसकी शुरुआत माता-पिता से होती है, और इसकी तैयारी गर्भाधान से पहले ही शुरू हो जाती है, गर्भ के दौरान चलती रहती है और बच्चे के जन्म के बाद विभिन्न रूप धारण कर लेती है।

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास के प्रारम्भ में महर्षि ने शतपथ ब्राह्मण का जो वाक्य उद्‌धृत करते हुए लिखा है कि जब माता, पिता और आचार्य तीनों उत्तम शिक्षक होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है, उसका यहाँ भी उल्लेख किया है। ये तीनों लोग अपनी भूमिका ठीक ढंग से किस प्रकार निभा सकते हैं, इस पुस्तक में वह अच्छी तरह स्पष्ट किया गया है।

माता-पिता और आचार्य का दायित्व है कि बच्चों को शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करने, गाली-गलौज आदि अपशब्दों से रहित शिष्ट भाषा बोलने, अनर्गल बातें न करने, खाने-पीने, उठने-बैठने, वस्त्रधारण करने, माता-पिता आदि का सम्मान करने, उनके सामने अपना मनमाना व्यवहार न करने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि का उपदेश करें। कई बार माता-पिता अपने लाड़-प्यार में बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार करने लगते हैं जो उचित नहीं। कभी बाल-क्रीड़ा का आनन्द लेने के लिए कहते है कि इसके बाल खींच लो, इसके कपड़े

छीन लो, या मानों उन्हें 'साहसी' बनाने के लिए कहते हैं, इसने तुम्हें गाली दी, तुम भी गाली दो, इसने तुम्हें मारा, तुम भी उसे मारो। वे भूल जाते हैं कि इससे बच्चा असभ्य और अनुशासनहीन बनेगा। ऐसे ही कभी कहते हैं कि जल्दी से

तुम्हारी शादी कर देंगे। उनका ध्यान नहीं जाता कि बच्चे को शादी योग्य बनने से पहले ब्रह्मचर्य आश्रम की तपस्या करनी है, अतः उसे इस आश्रम का पालन करने योग्य बनने की प्रेरणा देनी चाहिए, न कि उससे विरत होने की। इसीलिए महर्षि ने ऐसी सब बातों को 'कुशिक्षा' कहा है और ऐसी शिक्षा देने वालों को 'संतान का शत्रु, कुमाता, कुपिता' बताया है। **उनके अनुसार माता-पिता का कर्तव्य है कि बच्चों को हमेशा सद्गुणों का उपदेश करें, कर्तव्य पालन की प्रेरणा दें, धर्म-अधर्म, सच-झूठ का अंतर समझाएँ, पाखण्ड का खंडन करें, वेद-शास्त्र आदि का यथावत् ज्ञान कराएँ, इनके वचन कंठस्थ कराएँ, ईश्वर की उपासना करना सिखाएँ आदि।**

बाल्यावस्था मानव जीवन का अत्यन्त मूल्यवान समय है, इसे नष्ट न होने दें। इसके एक-एक क्षण का सदुपयोग करें।

व्यक्ति को योग्य बनाने में माता-पिता के समान ही शिक्षकों और उपदेशकों की भूमिका है।

उनमें कतिपय विशिष्ट गुण होने चाहिए तभी वे अपने दायित्वों का सम्यक् निर्वाह कर पाएँगे। उनसे अपेक्षित है कि वे ज्ञानी हों, वेद सहित विभिन्न विषयों के ज्ञाता हों, पर अभिमानी न हों। अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार करने वाले हों। आवश्यक होने पर कठोर व्यवहार भी करें, पर यह कठोरता ऊपर से ही हो, भीतर से कृपादृष्टि बनी रहे। शान्त होकर प्रश्नों के उत्तर देने वाले हों। जिन बातों को नहीं जानते, उन्हें भी तर्क के माध्यम से शीघ्र जानने-समझने की योग्यता वाले हों। कोरे ज्ञानी नहीं, बल्कि पठित ज्ञान के अनुरूप आचरण करने वाले हों, अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा एकरूप व्यवहार करते हों। उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि दुर्गुण न हों। वे आलसी न हों, परिश्रमी हों। सुख-दुःख सब बर्दाश्त करें, पर किसी भी लालच से धर्म का त्याग न करें। अपनी सामर्थ्य का विचार किए बिना बड़े-बड़े मनोरथ करने वाले या बिना परिश्रम के बड़े-बड़े कामों की इच्छा करने वाले, अपनी-दूसरों की अनावश्यक प्रशंसा करने वाले मूढ़ बुद्धि न हों। पढ़ाते समय शिक्षक ऐसी रीति अपनाएँ जिससे विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ता जाए। दृष्टान्त देकर, क्रियात्मक काम करके, यंत्रों का उपयोग करके, कलाकौशल, विचार आदि का ऐसा प्रयोग करें जिससे विद्यार्थी एक के जानने से हजारों अन्य पदार्थ यथावत् जान जाएँ। बुद्धि को बढ़ाने वाली क्रियाओं का अभ्यास कराएँ जिससे सत्य धर्म के प्रति निष्ठा विकसित हो।

संतान के गुण

जिस प्रकार माता-पिता और शिक्षकों से कुछ गुण अपेक्षित हैं, उसी प्रकार बच्चों, विद्यार्थियों से भी अपेक्षा है कि वे सच बोलें, सरल रहें, अभिमान न करें, निष्कपट रहें, आज्ञापालन करें, शान्त रहें, निन्दा न करें, चपलता न करें, माता, पिता, अध्यापक से ऊँचे आसन पर न बैठें, नीचे बैठें, ताड़ना पर क्रोध न करें, उनकी बात ध्यान देकर सुनें। शरीर, वस्त्र और अपना परिवेश साफ रखें। जो प्रतिज्ञा करें उसे पूरा करें। उपकार को मानें। आलसी न हों, पुरुषार्थी बनें।

काम-क्रोध-लोभ-मोह-भय आदि विद्या-विरोधी दुर्गुणों को

छोड़कर उत्तम गुण अपनाएँ। नशे के पदार्थ बुद्धि का नाश करते हैं, अतः वे कभी ग्रहण न करें। नियमित रूप से योगाभ्यास करें। ब्रह्मचर्य का पालन करके जितेन्द्रिय बनें और धर्मयुक्त आचरण करें। बड़ा होने पर माता-पिता आदि की सेवा अवश्य करें क्योंकि बाल्यावस्था में वे ही पालन पोषण एवं शिक्षण करते हैं, अतः उनकी सेवा करना परम धर्म है।

शिक्षा का अर्थ और महत्व

महर्षि के अनुसार शिक्षा का अर्थ किताबें रटना नहीं है, बल्कि शुभ गुण अर्जित करना है। विद्या कहते ही उसे हैं जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत जाना जाए और फिर

उसका उपयोग करके अपने लिए एवं दूसरों के लिए सुख की सिद्धि की जाए। यह क्रिया चार चरणों में सम्पन्न होती है- **आगम** (ध्यान देकर पढ़ाने वाले से विद्या ग्रहण करना), **स्वाध्याय** (जो कुछ पढ़ा उसे एकान्त में स्वस्थ चित्त होकर हृदय में दृढ़ करना), **प्रवचन** (पढ़ी हुई सामग्री दूसरों को प्रीतिपूर्वक पढ़ा सकना) और **व्यवहारकाल** (जो कुछ सीखा है उसके अनुरूप आचरण करना)। इसे ही कुछ विद्वानों ने श्रवण (सुनना), मनन (पढ़ी हुई सामग्री पर चिन्तन करना), निदिध्यासन (जो कुछ पढ़ा-सुना है, उसकी विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना) और साक्षात्कार (सीखे हुए ज्ञान को क्रिया से प्रत्यक्ष करना) कहा है। महर्षि ने विद्या में शुद्ध वर्णोच्चारण, व्यवहार की शुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों के संग, विषयकथाप्रसंग के त्याग, सुविचार आदि पर विशेष बल दिया है और विभिन्न विद्याओं से सम्बन्धित जो सत्यग्रन्थ हैं उनके अध्ययन की प्रेरणा दी है ताकि फिर व्यक्ति वेद आदि साध्य ग्रन्थों के अर्थ जान सके और स्वयं धार्मिक बनकर धार्मिकता का प्रसार करे ।

कुछ लोग शिक्षाद्वेषी होते हैं वे सोचते हैं कि पढ़-लिखकर क्या करना? मरना तो सबको है, चाहे पढ़ो या न पढ़ो। ऐशो-आराम से जीना हमारा उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए पैसा चाहिए, पढ़ाई किसी काम की नहीं। देखो न, अनेक पढ़े-लिखे लोग दरिद्र होते हैं और अनपढ़ धनवान होते हैं। धन पर अनावश्यक बल देने वाली इस मानसिकता से समाज का बहुत अहित हुआ है। **विद्या की उपेक्षा करने के कारण ही अज्ञान फैला, अंधविश्वास का अंधकार घिर गया, कुरीतियों-कुप्रथाओं ने जकड़ लिया।** महर्षि ने विद्या का महत्व बताते हुए कहा है कि विद्या का प्रयोजन यह नहीं है कि इससे जन्म-मरण जैसा ईश्वरीय नियम बदल जाएगा।

मानव जीवन का उद्देश्य भी केवल ऐशो-आराम से जीना नहीं है, बल्कि मानव जीवन के चार उद्देश्य हैं-

धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष की सिद्धि। विद्या से ही हमें इन चारों का यथावत् ज्ञान होता है और इनकी सिद्धि के उपायों की जानकारी मिलती है।

शिक्षा सबके लिए

पहले अनेक लोग यह मानते थे (आज भी कुछ लोगों में इस मान्यता के अवशेष देखे जा सकते हैं) कि शिक्षा केवल सवर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों) के लिए आवश्यक है, शूद्रों के लिए नहीं, और स्त्रियाँ चाहे सवर्ण हों या असवर्ण, उन्हें तो पढ़ाना ही नहीं चाहिए क्योंकि वेदों में ऐसा कहा गया है (**स्त्री शूद्रौ ना धीयताम् इति श्रुतेः**)। महर्षि ने इस मान्यता का खण्डन किया और बताया कि वेद के नाम पर यह नितान्त झूठी बात कही जाती है। वेदों में ऐसा कहीं नहीं कहा गया है, बल्कि वहाँ तो सबके लिए शिक्षा आवश्यक बताई है। तर्क से भी यही सिद्ध होता है कि शिक्षा सबको मिलनी चाहिए ताकि सभी लोग धार्मिक (अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा श्रेष्ठ आचरण करने वाले) बनें। यह सच है कि विशेष अध्ययन करके विद्वान् तो कुछ ही लोग बनेंगे, पर धार्मिक तो सब लोगों को बनना चाहिए। यहाँ महर्षि ने धार्मिक का विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किया है। उनका आशय है (क) विद्या की वृद्धि (स्वयं विद्या प्राप्त करना, विवेक शील बनना, अपनी सन्तान को एवं अन्य लोगों को विद्यादान करना-कराना), (ख) परोपकार (शरीर और मन से उद्योग करना और धन से कारखाने आदि खोल कर अनेक लोगों की जीविका का प्रबंध करना), (ग) अनाथों का पालन (बालक, वृद्ध, या अंग-भंग हो जाने के कारण जो अपना पालन स्वयं नहीं कर सकते, उनका पालन) इस प्रकार करना ताकि वे जितना काम कर सकते हैं उतना अवश्य करें, आलसी निकम्मे न बनें), और (घ) अपने सम्बन्धियों की रक्षा जैसे कार्य सबको करने चाहिए।

सत्य असत्य का निर्णय

लोग अकसर कहते हैं कि सत्य क्या है, असत्य क्या है, इसका पता हम कैसे लगाएँ? महर्षि ने इसके पाँच साधन बताए हैं-

(१) ईश्वर, उसके गुण कर्म स्वभाव और वेद विद्या (जैसे, ईश्वर का गुण है कि वह निराकार है, सर्वव्यापक है, अन्तर्यामी है, फिर भी अगर कोई उसकी मूर्ति बनाता है तो यह ईश्वर के गुणों के विपरीत होने के कारण असत्य हुई)।

(२) सृष्टिक्रम (जैसे, कोई कहे कि बिना माता-पिता के संतान का जन्म हुआ, तो सृष्टिक्रम के विरुद्ध होने से यह

असत्य है)।

(३) प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य अर्थात् इतिहास, अर्थापत्ति अर्थात् एक बात सुनकर दूसरी बात प्रसंग से जान लेना, संभव और अभाव)।

(४) आप्त अर्थात् सर्वहितैषी विद्वानों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ और सिद्धांत (५) अपनी आत्मा की साक्षी, अनुकूलता, जिज्ञासा, पवित्रता और विज्ञान। जो इन परीक्षाओं पर खरा उतरे, उसे ही सत्य मानें।

पति-पत्नी का व्यवहार

पति-पत्नी को कोई ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो एक दूसरे को पसन्द न हो। उनके बीच प्रेम और विश्वास का व्यवहार होना चाहिए। दोनों परस्पर एक दूसरे की सेवा करें। एक दूसरे की रुचि का ध्यान रखें। जब पति-पत्नी एक दूसरे से संतुष्ट होते हैं तभी परिवार में सुख शान्ति का वास होता है, परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ती है, धन-संपदा की प्राप्ति होती है, और संतान उत्तम बनती है। इसके लिए आवश्यक है कि दोनों ब्रह्मचर्य आश्रम में यथाविधि शिक्षा प्राप्त करें, युवा हो जाने पर ही विवाह करें, विवाह स्वयंवर विधि से करें, और गृहस्थाश्रम के आदर्शों का पालन करें।

मनुष्य के गुण

मनुष्य में कुछ ऐसे गुण हैं जो अन्य प्राणियों में नहीं पाए जाते। जैसे विद्यार्जन करना और उनके अनुरूप जीवन जीना मनुष्य की ही विशेषता है। इसी प्रकार जहाँ अन्य सब प्राणी बलवान से डरते हैं और निर्बल को सताते हैं, वहीं मनुष्य की विशेषता है कि वह निर्बल पर दया करता है और उनकी रक्षा करता है। उन्हें पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवान से भी नहीं डरता। ऐसे गुणों के कारण ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है। हर मनुष्य को ऐसे गुण अर्जित करने ही चाहिए।

सभा में व्यवहार

जब सभा आदि में जाएँ तो यह दृढ़ निश्चय करके जाएँ कि मैं सत्य के ही पक्ष में रहूँगा। सभा में दूसरों की बात ध्यान देकर सुनें। वह सत्य हो तो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करें, असत्य हो तो खंडन करें। यदि कोई प्रतिज्ञा करनी हो तो ऐसी ही करें जो सत्य के अनुरूप हो, और उसे यथावत् पूरा करें। बड़ाई-छोटाई न गिनें। व्यर्थ बकबाद न करें। अभिमान न करें, अपने को बड़ा न मानें। उचित स्थान पर बैठें और ऐसे ढंग से बैठें-उठें जो किसी को बुरा न लगे। सज्जनों का संग करें और दुष्टों से अलग रहें। सर्वहित पर दृष्टि रखें।

सत्य व्यवहार

अकसर लोग कहते हैं कि क्रेता-विक्रेता के बीच व्यापार में, या हार-जीत के प्रसंग में जीत के लिए सच से काम नहीं चलता, झूठ का व्यवहार करना ही पड़ता है। पर महर्षि ने उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि व्यापार की बात हो या हार-जीत की, सच के व्यवहार से वह बिलकुल सुगम हो जाती है, जबकि झूठ के व्यवहार के परिणाम हमेशा कष्ट देने वाले होते हैं। इसी प्रकार राजा और प्रजा (शासक और शासित) के बीच सत्य का धर्मयुक्त व्यवहार होना चाहिए। राजा अपनी प्रजा को सन्तान के समान समझे, श्रेष्ठ लोगों की रक्षा करे, दुष्टों को यथायोग्य दण्ड दे, और प्रजा की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखे। प्रजा अपने धर्मयुक्त व्यवहार से अपने कार्य सिद्ध करके यथाविधि 'कर' का भुगतान करे। राजा हो या प्रजा, जब वह केवल अपना-अपना हित सिद्ध करने की कोशिश करते हैं, तो फिर वे राजा-प्रजा के बजाय एक दूसरे के शत्रु, चोर, डाकू आदि कहलाते हैं।

इस प्रकार व्यवहार की छोटी-छोटी बातों की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करने के कारण यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इन दिनों माता-पिता के पास अपने बच्चों को देने के लिए 'सुविधाएँ' तो हैं, पर 'समय' नहीं है। आवश्यकता यह है कि बच्चों को खिलौने, पैसे और नए-नए उत्पाद देने के साथ ही

उन्हें वह समय दिया जाए जिसे अंग्रेजी में 'क्वालिटी टाइम' कहते हैं, ताकि उनकी छोटी-बड़ी हर बात पर ध्यान दिया जा सके। उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति, और संस्कारों से अवगत कराया जा सके। उन्हें सामाजिकता का पाठ पढ़ाया जा सके, और नैतिकता की भी शिक्षा दी जा सके। हमारी परम्परा में इसे ही 'धर्म' कहा गया है। याद रखिए, दुनिया कितनी भी बदल जाए, बच्चों की पहली पाठशाला घर ही होती है, **हाड़-मांस के पुतले में मनुष्यत्व की प्रतिष्ठा करने वाला घर ही होता है,** व्यक्तित्व की सुदृढ़ आधारशिला बनाने वाला अपना घर ही होता है।

(डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री)
पी/१३८, एम आई जी, पल्लवपुरम-२, मेरठ २५०११०
चलभाष- ०९७५८१८४४३२

□□□

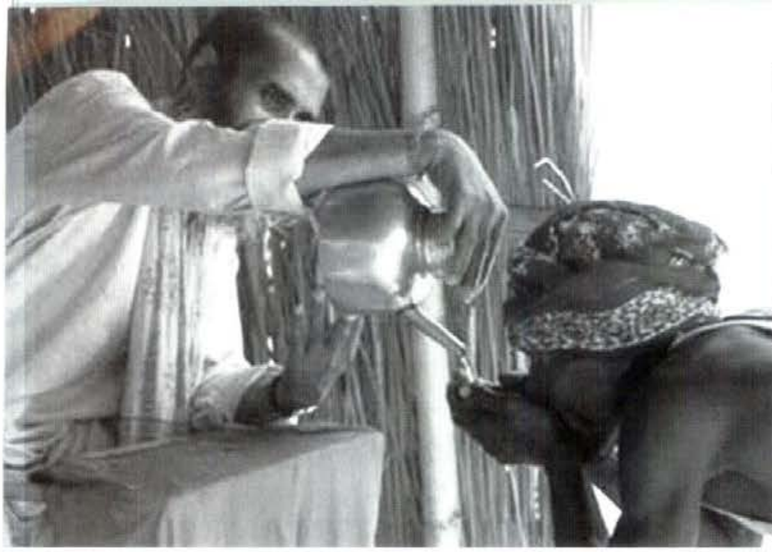

मनुर्भव:

एक सेठ की दुकान के बाहर कुछ मज़दूर काम कर रहे थे। तभी एक प्यासा मज़दूर दुकान के अन्दर गया और मालिक से बोला, 'सेठजी प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दो।' सेठजी ने कहा कि अभी मेरे पास कोई आदमी नहीं है और ये कहकर अपने मोबाइल पर लग गया। प्यासा आदमी पानी की तलाश में आसपास गया पर कहीं पानी नहीं मिला। कुछ देर बाद वह लौट आया और दुकान के मालिक से फिर बोला, 'सेठजी सचमुच बहुत प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दो।' सेठजी ने कहा कि अभी बोला था न कि कोई आदमी नहीं है। प्यासे आदमी ने कहा, 'सेठजी थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइए न।' इस दृष्टान्त को कई जगह कई बार पढ़ने का अवसर मिला। हर बार इस दृष्टान्त ने कुछ सोचने पर मजबूर किया।

"दूसरों की पीड़ा अथवा आवश्यकता को अनुभव करने वाला ही वास्तव में मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है"

'थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइए' इन शब्दों में कितना गहरा अर्थ छुपा हुआ है। इंसानियत की इससे अच्छी व्याख्या क्या हो सकती है? हमारे आर्ष ग्रन्थों में जगह-जगह लिखा है 'मनुर्भव' मनुष्य बन। क्या हम सचमुच मनुष्य नहीं हैं? मनुष्य किसे कहते हैं? यदि हम मनुष्य नहीं हैं तो फिर मनुष्य बनने का क्या उपाय है?

मनुष्य वास्तव में अपने कर्मों अथवा कार्यों से जाना जाता है। जैसे कर्म वैसा मनुष्य। अच्छे कर्म अच्छा मनुष्य और बुरे कर्म तो बुरा मनुष्य। दूसरे यह भी अनिवार्य है कि मनुष्य कर्म करे अकर्मण्य न रहे। कर्म भी उपयोगी हों। कर्म निष्काम हो तो इससे तो अच्छी कोई बात ही नहीं। मनुष्य में जब इन विशेषताओं का ह्रास होता है तो उसकी मनुष्यता ही प्रभावित होती है। हम प्रायः अपनी हैसियत के मुताबिक़ अपने कार्यों को निश्चित कर लेते हैं। जब हम किसी बड़े पद पर आसीन अथवा बहुत दौलतमंद हो जाते हैं तो सोचते हैं कि अब छोटे-मोटे कार्य करना हमारे लिए सम्मानजनक नहीं। छोटे-मोटे कामों को करने के लिए तो बहुत से लोग मिल जाएँगे। प्रश्न उठता है कि क्या छोटे-मोटे कार्यों को ठीक से परिभाषित करना संभव भी है? ये ठीक है कि हम अपनी हैसियत के अनुसार कार्य करते हैं। इसमें कोई दोष भी नहीं। लेकिन कुछ कार्य निश्चित रूप से ऐसे होते हैं जो बेशक छोटे दिखते हों लेकिन छोटे होते नहीं हैं। इन कार्यों को हमारे लिए अन्य कोई कर भी नहीं सकता। करेगा भी तो उसका वास्तविक लाभ हमें नहीं मिल पाएगा।

सोचने की बात है क्या हमारे बदले में हमारी जगह कोई किसी से प्रेम कर सकता है? संभव ही नहीं। जब हम ऐसा कोई कार्य करेंगे ही नहीं तो उसका आनन्द व उस आनन्द से प्राप्त लाभ भी हमें नहीं मिल पाएगा। जब हम ऐसे ही कार्यों को करवाने के लिए दूसरों का मुँह ताकने लगते हैं तो हमारा धर्म, हमारी नैतिकता व हमारी स्वाभाविकता अर्थात् हमारी मनुष्यता ही डगमगाने लगती है। अब पानी पिलाने की बात ही ले लीजिए। किसी को एक गिलास पानी दे देना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन किसी प्यासे को पानी पिलाने से बड़ा धर्म ही नहीं। इस कार्य को करने से जो संतुष्टि मिलती है वो अद्वितीय होती है। यदि हम ये कार्य किसी और से करवाते हैं अथवा नहीं करते हैं तो हम उस आनन्द से वंचित ही रह जाते हैं। जो भी अच्छे कार्य होते हैं अथवा जिनमें धार्मिक होने का भाव निहित रहता है वो वास्तव में मनुष्य के स्वयं के उत्थान के लिए होते हैं। उन कार्यों की उपेक्षा करके कहने को तो हम मनुष्यता से वंचित हो जाते हैं लेकिन वास्तव में अपने मूल स्वरूप से कटकर अपने आध्यात्मिक विकास को ही अवरुद्ध कर लेते हैं।

हमारे साथ एक विवशता कहिए अथवा विडंबना कहिए ये होती है कि हम वो बड़े-बड़े कार्य ही करना चाहते हैं जो

औरों का ध्यान आकर्षित कर सकें अथवा जिनसे हमें यश की प्राप्ति हो सके। इसीलिए कई लोग लाखों रुपए ख़र्च करके बड़े-बड़े भंडारे तो लगवाते रहते हैं लेकिन यदि कोई

भूखा-प्यासा उनसे सीधे रोटी या पानी माँग ले तो उनका व्यवहार बदल जाता है। किसी दुखी व्यक्ति को देखकर उनके मन में पीड़ा उपजने के स्थान पर क्रोध का भाव उत्पन्न होने लगता है। अपने कर्मचारियों या सेवकों की आवश्यकताओं के प्रति पूर्णतः असंवेदनशील बने रहते हैं। किसी भूखे-प्यासे अथवा दुखी व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करने की बजाय उसे दुत्कारने तक से वो परहेज नहीं करते। इसी के अभाव अथवा नकारात्मक भावों से मुक्ति ही है वास्तविक मनुष्य बनना या होना। यदि हम काल्पनिक प्रतिष्ठा अथवा यश की कामना से रहित होकर फ़ौरन किसी की मदद करने का संकल्प ले लें तो न केवल अधिक मानवीय हो सकेंगे अपितु हमारा वास्तविक आध्यात्मिक विकास भी संभव हो सकेगा। उर्दू शायर 'चकबस्त' ने कितना सही कहा है :

दर्दे-दिल पासे-वफ़ा
जज़्बा-ए-ईमां होना,
आदमीयत है यही और
यही इंसां होना।

सीताराम गुप्ता
ए. डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४
चलभाषस- ०९५५५६२२३२३
Email: srgupta54@yahoo.co.in

□□□

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेग्गा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

काश! दयानन्द कश्मीर जा पाते

कश्मीर की समस्या जो इस समय तक हल होने में नहीं आ रही, यह कोई समस्या न होती यदि महर्षि दयानन्द जी महाराज को कश्मीर जाने दिया जाता। परन्तु कश्मीरी पण्डितों ने अपने पाँव कुल्हाड़ा चलाकर महर्षि को कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह जी की अत्यन्त इच्छा होने के बावजूद भी वहाँ पाँव न रखने दिया।

१. कश्मीर नरेश महाराजा रणवीर सिंह जी स्वयं महर्षि जी को मिलने के बड़े इच्छुक थे और इसी अभिप्राय से उन्होंने देहली दरबार के मौके पर अपने मंत्री नीलाम्बर बाबू और दीवान अनन्तराम को स्वामी जी की सेवा में भेजा था। इन दोनों महानुभावों ने स्वामी जी से कश्मीर नरेश की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी ने महाराजा से मिलना स्वीकार कर लिया, परन्तु पण्डितों के सिखलाने बहकाने पर महाराजा स्वामी जी से न मिल सके। **पण्डित गणेश शास्त्री ने जो जम्मू में धर्मशास्त्र के जज थे, पण्डित लेखराम के सामने सन् १८८६ में यह स्वीकार किया था, कि महाराजा रणबीरसिंह जी की स्वामी जी को मिलने की उत्कट इच्छा थी, परन्तु हम लोगों ने नहीं मिलने दिया।** जब स्वामी जी लाहौर आये तो उस समय भी महाराजा साहब ने स्वामी जी को श्रीनगर बुलाने का विचार प्रकट किया था, तब भी पण्डितों ने यह कहकर कि यदि आप दयानन्द को बुलाना चाहते हैं तो पहले देव मंदिरों को गिरा दीजिए और इस तरह स्वामी जी को निमन्त्रित करने से रोक दिया था।

२. फिर महाराजा रणवीर सिंह ने स्वामी जी से अनुमति माँगी कि मुसलमान हो गये हिन्दुओं को शुद्ध करने की शास्त्र में आज्ञा है या नहीं। इस पर स्वामी जी ने स्पष्ट उत्तर दिया कि हिन्दुओं से मुसलमान होने वालों की क्या कथा शास्त्रों में तो हजारों सालों से बिछड़े भाइयों को वापस इस विशाल धर्म में ले लेने की भी आज्ञा है। इस पर महाराजा साहब ने अपने पण्डितों से विचार प्रकट किया कि लाखों हिन्दू विशेष तौर पर ब्राह्मण लोग जो जबरदस्ती या लालच से मुसलमान बनाए गये हैं उनको शुद्ध कर लेना चाहिए। तब भी पण्डितों ने महाराजा साहब से कहा कि यदि आप इनको शुद्ध करने की योजना बनायेंगे तो हम लोग आप के महल के सामने भूख हड़ताल करके अपने प्राण त्याग देंगे। परन्तु महर्षि को जम्मू कश्मीर जाने से रोकने और शुद्धि न करने के परिणाम स्वरूप अब कश्मीर की यह समस्या कितनी जटिल हो गई कि अरबों रुपया खर्च करने और हजारों जवानों की बलि देने पर भी यह हल नहीं हो रही। यदि महर्षि के चरण-कमल कश्मीर में पड़ जाते और महर्षि की आज्ञानुसार शुद्धि का चक्कर चलाया जाता तो अब कश्मीर की कोई समस्या ही न रहती। पण्डितों के बहकाने पर महाराजा कश्मीर ने रियासत में आर्य समाज का प्रचार और आर्य समाज की स्थापना की मनाही भी कर रखी थी, जो कि सन् १६१२ में एक विचित्र घटना के बाद हटाई गई।

३. जब ईसाईयों ने देखा कि कश्मीर राज्य में तो आर्य समाज का प्रचार ही नहीं हो सकता तो उन्होंने महाराजा को चैलेंज दिया कि यह अपने पण्डितों से इनका शास्त्रार्थ करावें, क्योंकि ईसाई पादरी जानते थे कि महाराजा कश्मीर बड़े धार्मिक विचारों के पुरुष हैं अगर वे ईसाई बन जावें तो, सारी रियासत में ईसाइयत का प्रचार बहुत आसानी से हो जावेगा। अतः शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ। नियत तिथि और समय पर महाराज के पण्डितों और ईसाई पादरियों में शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। महाराजा स्वयं इस शास्त्रार्थ में उपस्थित थे। ईसाईयों ने बड़े-बड़े पादरी इस शास्त्रार्थ के लिए मँगवाये थे। क्योंकि उनको पूरा निश्चय था कि शास्त्रार्थ में इनकी विजय हो जाने से महाराजा साहब अवश्य ईसाई बन जायेंगे। हजारों

की हाजरी में शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। ईसाई पादरियों के प्रश्नों का उत्तर देने का महाराज के किसी पण्डित में साहस न था और पण्डित विचारे एक दूसरे का मुँह देख रहे थे और महाराज साहब मन ही मन में अपने पण्डितों की शिकस्त को देखकर घबरा रहे थे, कि दैव योग से इस शास्त्रार्थ स्थल में आर्यसमाज के महोपदेशक पण्डित गणपति शर्मा जी उपस्थित थे। जब उन्होंने देखा कि ईसाईयों का पलड़ा भारी हो रहा है और पण्डित निरुत्तर होते चले जा रहे हैं तो वे अपनी जगह से उठ खड़े हुए। बिल्कुल साधारण वेश में एक दुबले पतले आदमी को शास्त्रार्थ स्थल में उठता देख कर सब चकित रह गये। पण्डित गणपति शर्मा ने महाराजा को सम्बोधन करके कहा-यदि मुझ को आज्ञा हो तो मैं आपके पण्डितों का पक्ष लेकर पादरी साहबान से शास्त्रार्थ करूँ। पण्डित लोग शास्त्रार्थ के मैदान से भागने वाले ही थे, और महाराजा जो मन में पण्डितों की शिकस्त से घबरा रहे थे। उन सब के मन में धैर्य बंधा, और उन्होंने पण्डित गणपति शर्मा को शास्त्रार्थ करने की अनुमति दे दी।

पण्डित गणपति शर्मा का शास्त्रार्थ स्थल में खड़ा होना था कि शास्त्रार्थ का पलड़ा ही पलट गया। जब पण्डित जी ने पादरियों के प्रश्नों का उत्तर देने के साथ-साथ, ईसाई मत पर प्रश्न किए तो पादरी घबरा गये। क्योंकि अब पादरियों के घबराने की बारी थी, बस फिर क्या था चन्द ही मिनटों में पादरी साहब निरुत्तर होकर शास्त्रार्थ स्थल छोड़ गये। और महाराजा की जय जयकार होने लग गई। शास्त्रार्थ खत्म हो गया सब अपने अपने स्थान पर चले गये। पण्डित गणपति शर्मा जी जम्मू के रघुनाथ मंदिर में जाकर फर्श पर लेट गये। महल में

पहुँच कर महाराज साहब को ख्याल आया कि उस पण्डित को जिसने हमारी पराजय को जय में (बदल) परिवर्तित कर दिया, कुछ पारितोषिक देना चाहिए। अतः उन्होंने अपने पण्डितों को पण्डित गणपति शर्मा को बुलाने भेजा। और रघुनाथ मंदिर से पण्डित गणपति शर्मा को राजमहल में ले गये। महाराजा साहब ने बड़े आदर सम्मान से उनको बिठाया और एक हजार रुपया उनको भेंट किया परन्तु पण्डित गणपति जी ने महाराजा साहब से कहा कि यदि आप मुझे पारितोषिक देना ही चाहते हैं, तो यह चीजें मुझे नहीं चाहिए। आप अपनी रियासत में आर्य समाज स्थापना करने की घोषणा कर देवें। फिर आपको न कोई ईसाई पादरी और न ही मुसलमान मौलवी शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज करेगा। सो महाराजा साहब ने स्वीकार कर लिया और तब से ही किसी विधर्मी को शास्त्रार्थ का चैलेंज करने की हिम्मत नहीं हुई। धन्य थे पण्डित गणपति शर्मा जो अपने लिए कुछ न लेकर धर्म और आर्य जाति हित का पुरस्कार स्वीकार कर सके। और अब आप यह सुनकर भी हर्षित होंगे कि विभाजन के बाद रियासत जम्मू और काश्मीर को भारत के साथ मिलाने का काम भी महर्षि दयानन्द के एक श्रद्धालु श्री मेहरचन्द जी महाजन रिटायर्ड चीफ जज सुप्रीम कोर्ट जो इस वक्त महाराज हरिसिंह जी काश्मीर नरेश के प्रधान मंत्री थे और जिनकी महाराज साहब बहुत इज्जत करते थे, की प्रेरणा से हुआ। और महाराजा साहब ने भारत के साथ रियासत का सम्बन्ध करने वाले पत्रों पर हस्ताक्षर किये थे।

कुन्दनलाल आर्य चूनियाँ वाला
साभार- पूर्णपुरुष का विचित्र जीवन चरित्र

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

समाचार

स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

अनेक प्रतिस्पर्धा इस अवसर पर आयोजित की गयीं। जिनमें विद्यालय

की छात्राओं के द्वारा देश भक्ति से सराबोर लोकगीत, लोकनृत्य, सूर्य नमस्कार एवं छोटी बालिकाओं द्वारा मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए गए।

विद्यालय की संरक्षक श्रीमती शारदा गुप्ता, प्रधान श्री भँवर लाल आर्य एवं श्रीमती ललिता मेहरा ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। विद्यालय की मानद निदेशिका श्रीमती पुष्पा सिंधी ने विद्यालय की गतिविधियों से परिचय कराया। विद्यालय के मंत्री श्री कृष्ण कुमार सोनी ने अतिथियों का आभार प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया।

- कृष्ण कुमार सोनी, मंत्री

बहिष्कार करें चीनी वस्तुओं का

साम्राज्यवादी सोच तथा जमीन हड़पने की बढ़ती लालसा के साथ अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारने को प्रयासरत चीन की बुद्धि-शुद्धि हेतु

विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) द्वारा एक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ-साथ हमारी सीमाओं में घुसने का बारम्बार प्रयास कर हमारे ही धन से हमारे ऊपर हमला करने का दुस्साहस करने वाले तथा हमारी कैलाश मानसरोवर में टाँग अडाने वाले आतंकियों के पक्षधर चीन को अब सबक सिखाने का समय आ चुका है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति को अब कड़ी प्रतिज्ञा कर चीनी वस्तुओं का सम्पूर्ण बहिष्कार करना होगा। १९६२ के युद्ध में ४३००० वर्ग किमी भू-भाग को हड़पने वाले चीनी की कुदृष्टि अब हमारे अरुणाचल प्रदेश के ९०,००० वर्ग किमी के पवित्र भूमि पर है। भारत के कुल व्यापार घाटे का ६०% हिस्सा चीन के कारण है। इसने हमारे कुल निर्माण के २४% हिस्से पर कब्जा जमा रखा है। परिणामस्वरूप, भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर विश्व में सर्वाधिक होने पर भी, एक ओर देश बेरोजगारी, पर्यावरण असुरक्षा तथा आर्थिक संकट से गुजर रहा है वहीं दूसरी ओर वह 'हमारी बिल्ली हमीं को म्याऊँ ' की कहावत को चरितार्थ कर रहा है। श्री बंसल ने संकल्प दिलाया कि हम चीन की बनी किसी भी वस्तु का प्रयोग नहीं करेंगे चाहे वह छोटी सी राखी ही क्यों न हो। उपस्थित बहिनों ने भारतीय सूती कलावे से अपने हाथ की बनाई हुई राखी को ही रक्षासूत्र के रूप में प्रयोग कर अपने बहादुर सैनिकों के सम्मान की रक्षा करने का आह्वान किया।

- विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता (विहिप)

देवला में चिकित्सा शिविर सम्पन्न

१३ अगस्त २०१७ को राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद्, पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं महावीर इन्टरनेशनल के संयुक्त प्रयास से देवला

आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय में निःशुल्क एक दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ।

शिविर में स्त्री रोग, बाल रोग, नेत्र रोग, अस्थि रोग, नाक कान गला, चर्म रोग, दन्त रोग आदि रोगों का समाधान किया गया। साथ ही ब्लड शुगर, हीमोग्लोबिन, ईसीजी की जाँच भी की गई।

इस अवसर पर पेसिफिक मेडिकल कॉलेज के विभागाध्यक्ष डॉ. पी. सी. जैन, महावीर इन्टरनेशल के श्री बी. एल. खमेसरा मौजूद रहे। कल्याण आश्रम के संगठन मंत्री श्री भगवान सहाय, डॉ. राधिका लढ़ा, गोपाल लाल कुमावत, रमेश मूंदड़ा, नक्षत्र लाल नागौरी, वेणु कौशिक, सरला मूंदड़ा, विमला मूंदड़ा, कुसुम बोर्दिया ने सहयोग दिया।

कार्यक्रम में स्थानीय विधायक श्री प्रतापराम गमेती ने सभी कार्यकर्त्ताओं के साथ विद्या मंदिर प्रांगण में पौधारोपण भी किया।

- रामलाल पटेल (विभाग संगठन मंत्री)

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर में संपन्न विश्व शान्ति यज्ञ

२० अगस्त २०१७ को वेद कथा के समापन दिवस पर आचार्य आनन्द पुरुषार्थी (होशंगाबाद, म. प्र.) के ब्रह्मत्व में १०८ (एक सौ आठ) यजमान जोड़ों ने छब्बीस यज्ञ वेदियों पर विराजकर पारिवारिक सुख-शान्ति-समृद्धि, सामाजिक मेल-मिलाप, राष्ट्र कल्याण एवं विश्व शान्ति हेतु अत्यन्त श्रद्धायुक्त वातावरण में वेदमन्त्रों द्वारा यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कीं। आचार्य जी ने यजमानों से दक्षिणा के रूप में

प्रतिदिन माता-पिता एवं बुजुर्गों को प्रणाम, संध्या-वन्दना-यज्ञ, स्वाध्याय करने एवं काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार आदि शत्रुओं को छोड़ने का संकल्प करवाया। उन्होंने अपने प्रवचन में वेद एवं सोलह संस्कारों की विस्तृत व्याख्या की। श्रीमती राधा त्रिवेदी एवं श्री इन्द्रदेव पीयूष ने मधुर वाणी में भजन प्रस्तुत किये। वेदकथा का प्रारम्भ १६ अगस्त से हुआ जिसमें प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ, भजन एवं वेद मन्त्रों की व्याख्या अत्यन्त सरल भाषा एवं कथानकों के माध्यम से श्रोताओं ने सुनी एवं हृदयंगम की।

- श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री

हलचल

'साधक की साधना' स्मारिका का महाशय धर्मपाल ने किया विमोचन

कोटा एवं आसपास के क्षेत्र में समाज के विकास में (स्व.) श्रीकृष्ण साधक का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। उनके किये गये कार्यों का ही परिणाम है कि आज आर्य समाज कोटा अपने कार्यों से प्रगति के पथ पर सतत् आगे बढ़ रहा है। उक्त विचार एमडीएच के चैयरमेन

महाशय धर्मपालजी ने कोटा के सुप्रसिद्ध आर्य व्यक्तित्व श्रीकृष्ण साधक के जीवन पर प्रकाशित स्मारिका के विमोचन के अवसर पर अपने संदेश में व्यक्त किये। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'साधक की साधना' के नई दिल्ली में विमोचन के इस अवसर पर महाशय जी ने कहा कि श्रीकृष्ण साधक का व्यक्तित्व अत्यन्त मिलनसार रहा है। इस अवसर पर विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि श्रीकृष्ण साधक जी का जीवन अन्यों के लिए प्रेरणादायी रहा है। आपकी प्रेरणा से अनेकों युवक आर्यसमाज से जुड़े। सिद्धान्तभूषण एवं सिद्धान्त शास्त्री जैसी परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने हेतु प्रेरित कर आपने उन्हें निष्ठावान आर्य बनाया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रीकृष्ण जी एक कुशल संगठनकर्ता थे। हाड़ौती अंचल की विभिन्न आर्य समाजों को एकसाथ मिलकर काम करने के लिए आपने 'हाड़ौती क्षेत्रीय आर्य उपप्रतिनिधि सभा कोटा' का गठन किया। उनके बताये पथ पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा आज भी सभी आर्य समाजों के साथ मिलकर आर्य समाज एवं वेद प्रचार का कार्य कर रही है। कार्यक्रम में ओमप्रकाश आर्य उपप्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि श्रीकृष्ण साधक का शिक्षक होना हमेशा उन्हें शिक्षा के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध कराता रहता था। कोटा में डीएवी की स्थापना में आपका योगदान अविस्मरणीय है।

स्मारिका विमोचन के इस अवसर पर श्रीकृष्ण साधक के सुयोग्य सुपुत्र डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता ने अपने जीवन को पूज्य बाबूजी के दिये संस्कारों का परिणामरूप बतलाते हुए अपने आभारोद्गार में कहा कि स्मारिका के प्रकाशन में प्रकाशक, लेखक, सम्पादक एवं आर्थिक सहयोग करने वाले सभी धन्यवाद के पात्र हैं और उससे अधिक वे सराहनीय हैं जिन्होंने इस प्रकार की उच्च सोच रखकर इसे प्रकाशित कराया।

डॉ. धर्मपाल आर्य को हार्दिक श्रद्धाञ्जली

आर्य समाज के विद्वान् एवं शिक्षाविद् डॉ. धर्मपाल आर्य का दिनांक ६ जुलाई २०१७ को निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया, उसके पश्चात् वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति बने तथा अनेकों वर्षों तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री तथा अनेकों सामाजिक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य रहे।

न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

प्रतिस्वर

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के लेखों का स्तर अत्यन्त उच्चकोटि का मिलता है। कथ्यात्मक बिन्दू का विश्लेषण व्याख्या परक दृष्टान्त-दृष्टान्तपूर्ण स्वरूप लिए हुए होता है। आधुनिक विज्ञान से सम्बद्ध ज्ञान वाला लेखों के साथ रुढ़िवादी परिपाटियों का विस्तृत विश्लेषण करते हुए उनके पीछे पीछे कारणों (यथा भौतिक सिद्धान्तों, शारीरिक उत्पन्न रोगों के परिणामों तथा उनके उन्मूलन की ओर प्रकाश डाला जाता है)। सम्पादक महोदय तथा उनका सम्पादक मण्डल साधुवाद के पात्र हैं। वहीं मुद्रण आकर्षक तथा कवर पृष्ठ पर ही 'पद' के अन्दर सत्यार्थप्रकाश पढ़ने की प्रेरणा का सन्देश पाठक को आकर्षित ही नहीं करता पत्रिका को पढ़ने की तीव्र उत्कण्ठा भी पैदा करता है। सम्पादक महोदय विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

- शिव कुमार कुर्मी, जयपुर

स्वाध्याय से जीव का ईश्वर के साथ साझा होता है

आर्यसमाज दयानन्द भवन, सदर व आर्यसमाज जरीपटका, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित श्रावणी उपाकर्म महोत्सव में यज्ञ, भजन व वेदप्रवचन के कार्यक्रम हुए।

इस अवसर पर दिनांक ११ अगस्त २०१७ को वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने सम्बोधित किया कि स्वाध्याय के द्वारा जीव का इष्टदेव परमेश्वर से साझा हो जाता है।

समारोह में आर्य भजनोपदेशक पण्डित सुखपाल आर्य ने ईश्वर भक्ति व यज्ञमहिमा विषयक भजन व गीतों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया।

- धनलाल शेन्दरे, मन्त्री - आर्यसमाज दयानन्द भवन, नागपुर (महाराष्ट्र)

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०७/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली**- ०७/१७ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री इन्द्रजित देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री रमेश आर्य; गुरदासपुर (पंजाब), श्री अच्च्युता हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; भीलवाड़ा (राज.), श्री हीरा लाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झँवर; सिहोर (म.प्र.), श्री सुबोध गुप्ता; हरिद्वार (उत्तराखण्ड), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री रमेशचन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री मोहन यादव; सिमडेगा (झारखण्ड), वासुदेव भाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात)। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २३ पर अवश्य पढ़ें।

मधुमेह
लक्षण एवं उपचार

संसार भर में मधुमेह रोगियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है विशेषरूप से भारत में। इस बीमारी में रक्त में ग्लूकोज का स्तर सामान्य से अधिक बढ़ जाता है तथा रक्त की कोशिका इस शर्करा को उपयोग नहीं कर पाती। यदि यह ग्लूकोज का बढ़ा हुआ लेवल खून में लगातार बना रहे तो शरीर के अंग प्रत्यंगों को नुकसान पहुँचाना शुरू कर देता है।

खानपान एवं लाइफ स्टाइल की गलत आदतें जैसे मधुर एवं भारी भोजन का अधिक सेवन करना, चाय, दूध आदि में चीनी का ज्यादा सेवन, कोल्डड्रिंक्स एवं अन्य साफ्टड्रिंक्स अधिक पीना, शारीरिक परिश्रम न करना, मोटापा, तनाव, धूम्रपान, तम्बाकू, आनुवंशिकता आदि डायबिटीज के प्रमुख कारण हैं ।

डायबिटीज की चिकित्सा

१. खानपान में सुधार करें- चीनी (sugar) एवं अन्य मीठे पदार्थों का सेवन कम से कम करें या ना करें, चोकरयुक्त आटा, हरी सब्जियाँ ज्यादा खाएँ, मीठे फलों को छोड़कर अन्य फल खाएँ, एक बार में ज्यादा खाने की बजाय भोजन को छोटे-छोटे अंतराल में लें, घी तेल से बनी एवं तली भुनी चीजें जैसे-समोसे, कचौड़ी, पूड़ी, परांठे आदि का सेवन कम से कम करें, गेहूँ, जौ एवं चने को मिलाकर बनाई हुई यानि मिस्सी रोटी शुगर की बीमारी में बहुत फायदेमंद होती है।

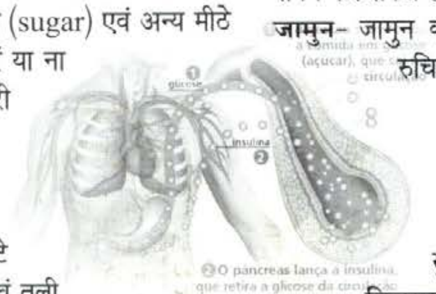

२. शारीरिक रूप से सक्रिय रहें- नित्य व्यायाम करना, योग-प्राणायाम का नियमित अभ्यास करना, सुबह शाम चहलकदमी (Morning-Evening walk) करना मधुमेह रोग में शुगर कंट्रोल करने के लिए बहुत लाभदायक है तथा मोटापा नियंत्रण में रहता है जो कि डायबिटीज का महत्वपूर्ण कारण है।

३. तनाव (Tension, Anxiety, Stress) से बचें-

मधुमेह रोग में तनाव की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है तनाव से बचने की पूरी कोशिश करें। स्ट्रेस या तनाव के कारणों को आपसी बातचीत से हल करें। योग, प्राणायाम, ध्यान तथा सुबह शाम घूमने से स्ट्रेस कंट्रोल करने में सहायता मिलती है।

४.घरेलू उपाय (Home Remedies for Diabetes)-

आयुर्वेद की कुछ जड़ी बूटियाँ मधुमेह रोग में बहुत उपयोगी हैं इनका सेवन डायबिटीज में बहुत लम्बे समय से किया जा रहा है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी डायबिटीज में इनकी उपयोगिता सिद्ध कर चुका है।

दानामेथी- दानामेथी मधुमेह में बहुत उपयोगी है इसके लिए एक या दो चम्मच दाना मेथी को एक गिलास पानी में रात में भिगो देते हैं सुबह मेथी को चबा चबाकर खा लेते हैं तथा मेथी के पानी को पी लेते हैं या मेथी का चूर्ण या सब्जी बनाकर भी सेवन कर सकते हैं।

करेला- करेला भी डायबिटीज के लिए अति महत्वपूर्ण है इसके लिए करेले का जूस अकेले या आंवले के जूस में मिलाकर१००-१२५ ml की मात्रा में सुबह-शाम भूखे पेट लें साथ ही करेले की सब्जी बनाकर या चूर्ण के रूप में भी सेवन कर सकते हैं।

जामुन- जामुन का फल खाने में जितना स्वादिष्ट और रुचिकारक होता है उतना ही शुगर की तकलीफ में लाभदायक होता है इसके लिए जामुन के सीजन में जामुन के फल खाए जा सकते हैं तथा सीजन ना होने पर जामुन की गुठली का चूर्ण सुबह-शाम भूखे पेट पानी से ले सकते हैं।

विजयसार- विजयसार को ना केवल आयुर्वेद बल्कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी डायबिटीज में बहुत उपयोगी मानता है इसके लिए विजयसार की लकड़ी से बने गिलास में रात में पानी भरकर रख दिया जाता है सुबह भूखे पेट इस पानी को पी लिया जाता है विजयसार की लकड़ी में पाये जाने वाले तत्व रक्त में इन्सुलिन के स्राव को बढ़ाने में सहायता करते हैं।

मधुमेह नाशक पाउडर- इसके लिए गिलोय, गुड़मार, कुटकी, बिल्वपत्र, जामुन की गुठली, हरड़, चिरायता, आंवला, कालीजीरी, तेजपत्र, बहेड़ा नीमपत्र एवं अन्य जड़ी-बूटियों को एक निश्चित अनुपात में लेकर पाउडर बनाया जाता है जो कि डायबिटीज में बहुत फायदेमंद साबित होता है।

उपरोक्त उपाय जरुरत के अनुसार उपयोग करने चाहिये, खून में शुगर का लेवल कम ना हो जाये इसलिए समय-समय पर शुगर चैक करते रहना चाहिए।

प्रस्तुति- गोपाल मिश्रा
साभार- अच्छी खबर

कथा सरित

जमीर

रैकेट बॉल की विश्व चैम्पियनशिप का फाइनल मैच चल रहा था। रुबेन गॉनजेलिस फाइनल मैच खेल रहे थे। उनके प्रतिद्वन्द्वी और उनमें कड़ी टक्कर थी। दर्शक सांस रोके मैच देख रहे थे। अचानक मैच पॉइंट पर गॉनजेलिस ने एक बहुत अच्छा शॉट खेला। रेफरी और लाइंस मैन, दोनों ने उनके शॉट को सही बताया और उन्हें विजेता घोषित कर दिया गया।

इस घोषणा के साथ ही चारों ओर तालियाँ गूँज उठीं। लोगों ने रुबेन गॉनजेलिस के नारे लगाने शुरू कर दिए। रुबेन हतप्रभ थे। उन्हें कुछ समझ ही नहीं आ रहा था कि अचानक यह क्या हो गया। उन्होंने अपने आपको सम्भाला और वह प्रतिद्वन्द्वी से हाथ मिलाते हुए बोले- 'शॉट गलत था।' उनके यह कहते ही सब सन्नाटे में आ गए। परिणामस्वरूप वह सर्विस हार गए और मैच भी। पल में इतना बड़ा निर्णय पलट गया। वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति निर्णय के उलट-फेर से दंग रह गया। प्रत्येक व्यक्ति रुबेन गॅानजेलिस के सच से हैरान था। यह कोई सोच भी नहीं सकता था कि एक खिलाड़ी, जिसके हक में सारी बातें हों, वह हार को सच बोलकर इस तरह से गले लगा लेगा। काफी देर तक इसी के बारे में चर्चा होती रही।

माहौल जब थमा तो मीडिया ने पूछा कि जब सब चीजें उनके पक्ष में थीं तो उन्होंने विश्व चैम्पियनशिप की इतनी बड़ी जीत को स्वीकार क्यों नहीं किया? इस पर रुबेन गॉनजेलिस ने सहजता से कहा- 'अपने जमीर को बनाए रखने के लिए मेरे पास यही एक रास्ता था। यदि मैं आज ऐसा नहीं करता तो यह जीत मुझे जिन्दगी भर तड़पाती रहती। इसलिए मैंने मैच हारकर सच्चाई को जिताने का फैसला किया।' आज भी उनकी यह घटना हृदय को झकझोर देती है।

❑❑❑

प्रस्तुतकर्त्ता- रेनू सैनी

सत्य की ताकत

दुनिया के कट्टर और खूंखार बादशाहों में तैमूरलंग का नाम भी आता है। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, अहंकार और जवाहरात की तृष्णा से पीड़ित तैमूर ने एक बार विशाल भू-भाग को रौंदकर रख दिया। उसकी क्रूरता का पता इस बात से चलता है, जब बगदाद में उसने एक लाख मरे हुए व्यक्तियों की खोपड़ियों का पहाड़ खड़ा कराया था।

एक बार बहुत से गुलाम पकड़कर तैमूरलंग के सामने लाए गए। तुर्किस्तान का विख्यात् कवि अहमदी भी दुर्भाग्य से उन गुलामों के साथ पकड़ा गया। जब कवि अहमदी तैमूर के सामने उपस्थित हुआ तो खतरनाक हँसी हँसते हुए उसने दो गुलामों की ओर इशारा करते हुए अहमदी से पूछा- 'सुना है कि कवि बड़े पारखी होते हैं। क्या तुम बता सकते हो इन गुलामों की कीमत क्या होगी।' अहमदी ने सरल और स्पष्ट उत्तर दिया- 'इनमें से कोई भी पाँच हजार अशर्फियों से कम कीमत का नहीं।'

'अच्छा तो बताओ मेरी कीमत क्या होगी।' तैमूर ने बड़े अभिमान से पूछा। 'यही कोई पच्चीस अशर्फी।' निश्चिन्त भाव से अहमदी ने उत्तर दिया। इतना सुनते ही तैमूर क्रोध से आग बबूला हो गया और चिल्लाकर बोला- 'बदमाश! इतने में तो मेरी सदरी भी नहीं बन सकती, तू यह कैसे कह सकता है कि मेरा कुल मूल्य पच्चीस अशर्फी है।'

अहमदी ने बिना किसी डर, आवेश या उत्तेजना के उत्तर दिया- 'जी! बस, यह कीमत भी उसी सदरी की है, आपकी तो कुछ नहीं, क्योंकि जो मनुष्य पीड़ितों की सेवा नहीं कर सकता, बड़ा होकर छोटों की रक्षा नहीं कर सकता, असहायों, अनाथों की जो सहायता नहीं कर सकता, अपना मनुष्य होने से बढ़कर जिसे अहमियत प्यारी हो, उस इंसान का मूल्य तो चार कौड़ी भी नहीं। उससे अच्छे तो ये गुलाम ही हैं, जो किसी के काम तो आते हैं।' अहमदी की यह बात सुनते ही तैमूर का अहंकार

❑❑❑

प्रस्तुतकर्त्ता- राधा नाचीज

राजा भी दण्डाधीन

इस प्रकार के मिथ्यावादियों के लिए और भी अनेक प्रकार के कठोर दण्ड देने का विधान मनुस्मृति के (मनु. ८-११५ से १२१, १२५, १२६) आधार पर उन्होंने किया है। इसलिए उन्होंने साक्षियों को भी सदा सत्य बोलने की प्रेरणा देते हुए कहा है-

सत्येन पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्धते।

..........**हृद्येष पुण्यपापेक्षिता मुनिः।।** (मनु. ८-८३-८४, ९१, ९६)

सत्य बोलने से साक्षी पवित्र होता और सत्य ही बोलने से धर्म बढ़ता है। इससे सब वर्णों में साक्षियों को सत्य ही बोलना योग्य है। आत्मा का साक्षी आत्मा और आत्मा की गति आत्मा है, इसको जानके, हे पुरुष! तू सब लोगों का उत्तम साक्षी अपने आत्मा का अपमान मत कर अर्थात् सत्यभूषण जो कि तेरे आत्मा-मन-वाणी में है वह 'सत्य' और जो इससे विपरीत है, वह 'मिथ्याभाषण' है। ....जो दूसरा तेरे हृदय में अन्तर्यामी परमात्मा पुण्य-पाप को देखने वाला मनः स्थित है, उस परमात्मा से डरकर सदा सत्य बोला कर...........।

दण्ड सर्वोपरि है। राजा तथा न्यायाधीश भी तदाधीन हैं। बल्कि समान अपाध करने पर, जो ज्यादा विद्वान्, प्रतिष्ठित है, उसे अन्यों की अपेक्षा अधिक दण्ड का विधान है।

महर्षि लिखते हैं-

'चाहे पिता, आचार्य, मित्र, माता, स्त्री, पुत्र और पुरोहित क्यों न हो जो स्वधर्म में स्थित नहीं रहता, वह राजा का अदण्ड्य नहीं होता। अर्थात् जब राजा न्यायासन पर बैठ न्याय करे, तब किसी का पक्षपात न करे, किन्तु यथोचित दण्ड देवे। जिस अपराध में साधारण मनुष्य पर एक पैसा दण्ड हो; उसी अपराध में राजा को सहस्र पैसा दण्ड होवे। अर्थात् साधारण मनुष्य से राजा को सहस्र गुणा दण्ड होना चाहिये। मन्त्री अर्थात् राजा के दीवान को आठ सौ गुणा, उससे न्यून को सात सौ गुणा और उससे भी न्यून को छः सौ गुणा, इसी प्रकार उत्तर-उत्तर अर्थात् जो एक छोटे से छोटा भृत्य अर्थात् चपरासी है, उसको आठ गुणे दण्ड से कम न होना चाहिए। क्योंकि यदि प्रजापुरुषों से राजपुरुषों को अधिक दण्ड न होवे तो राजपुरुष प्रजापुरुषों का नाश कर देवें, जैसे सिंह अधिक और बकरी थोड़े दण्ड से ही वश में आ जाती है, इसलिये राजा से लेकर छोटे-से-छोटे भृत्य पर्यन्त राजपुरुषों को अपराध में प्रजापुरुषों से अधिक दण्ड होना चाहिये। वैसे ही जो कुछ विवेकी होकर चोरी करे, उस शूद्र को चोरी से आठ गुणा, वैश्य को सोलह गुणा, क्षत्रिय को बत्तीस गुणा, ब्राह्मण को चौंसठ गुणा वा सौ गुणा अथवा एक सौ अट्ठाईस गुणा दण्ड होना चाहिये। अर्थात् जिसका जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो, उसको अपराध में उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिये। राज्य के अधिकारी धर्म्म और ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाला राजा, बलात्कार-काम करने वाले डाकुओं को दण्ड देने में एक क्षण भी देर न करे।'

(सत्यार्थ प्रकाश ६ समुल्लास)

अथर्ववेद में राजा को, समुचित दण्ड देने हेतु निर्देश भी दृष्टव्य हैं-

१. राजा अपने और पराये का विचार छोड़, पक्षपात रहित होकर, शान्तिनाशक, विवादी पुरुष को देश बाहर कर दे। **- अथर्व. ३/३/६**

२. हे राजन्! तू स्तुति को प्राप्त करके चोर व डाकू का हननकर्त्ता हुआ करता था। **- अथर्व. १/७/१**

३. अमृत पीनेहारा अर्थात् शान्त स्वभाव यशस्वी राजा दुष्टों का नाश करे। **- अथर्व. १/८/३**

४. राजा सत्पुरुषों के विरोधी दुष्टाचारियों को दृढ़ बंधनों में डालकर निर्धन और नष्ट कर दे। **- अथर्व. ३/६/५**

५. '**इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीड्यस्व**' तू बिजली की मूठ के समान दुष्टों को मारने वाला है, राज्य को दृढ़ कर। **- अथर्व. ६/१२६/२**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में कहते हैं कि कामी राजा और न्यायाधीश भी दण्डित किये जाने चाहिए। इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं-

प्रश्न- जो राजा वा राणी अथवा न्यायाधीश वा उसकी स्त्री व्यभिचारादि कुकर्म करें, तो उसको कौन दण्ड देवे?

उत्तर- सभी! और उनको तो प्रजापुरुषों से भी अधिक दण्ड होना चाहिए।

प्रश्न- राजादि उनसे दण्ड क्यों ग्रहण करेंगे?

उत्तर- राजा भी एक पुण्यात्मा, भाग्यशाली मनुष्य है। जब उसी को दण्ड न दिया जाए, और वह दण्ड ग्रहण न करे, तो दूसरे मनुष्य दण्ड को क्यों मानेंगे? और जब सब प्रजा और प्रधान राज्याधिकारी और सभा धार्मिकता से दण्ड देना चाहें, तो अकेला राजा क्या कर सकता है?जो ऐसी व्यवस्था न हो, तो राजा, प्रधान और सब समर्थ पुरुष अन्याय में डूबकर न्याय धर्म को डुबोके सब प्रजा का नाश कर आप भी नष्ट हो जाएं अर्थात् उस श्लोक के अर्थ का स्मरण करो कि, ''न्याययुक्त दण्ड ही का नाम राजा और धर्म है जो उसका लोप करता है, उससे नीच पुरुष दूसरा कौन होगा?''

□□□

सम्पादक- अशोक आर्य

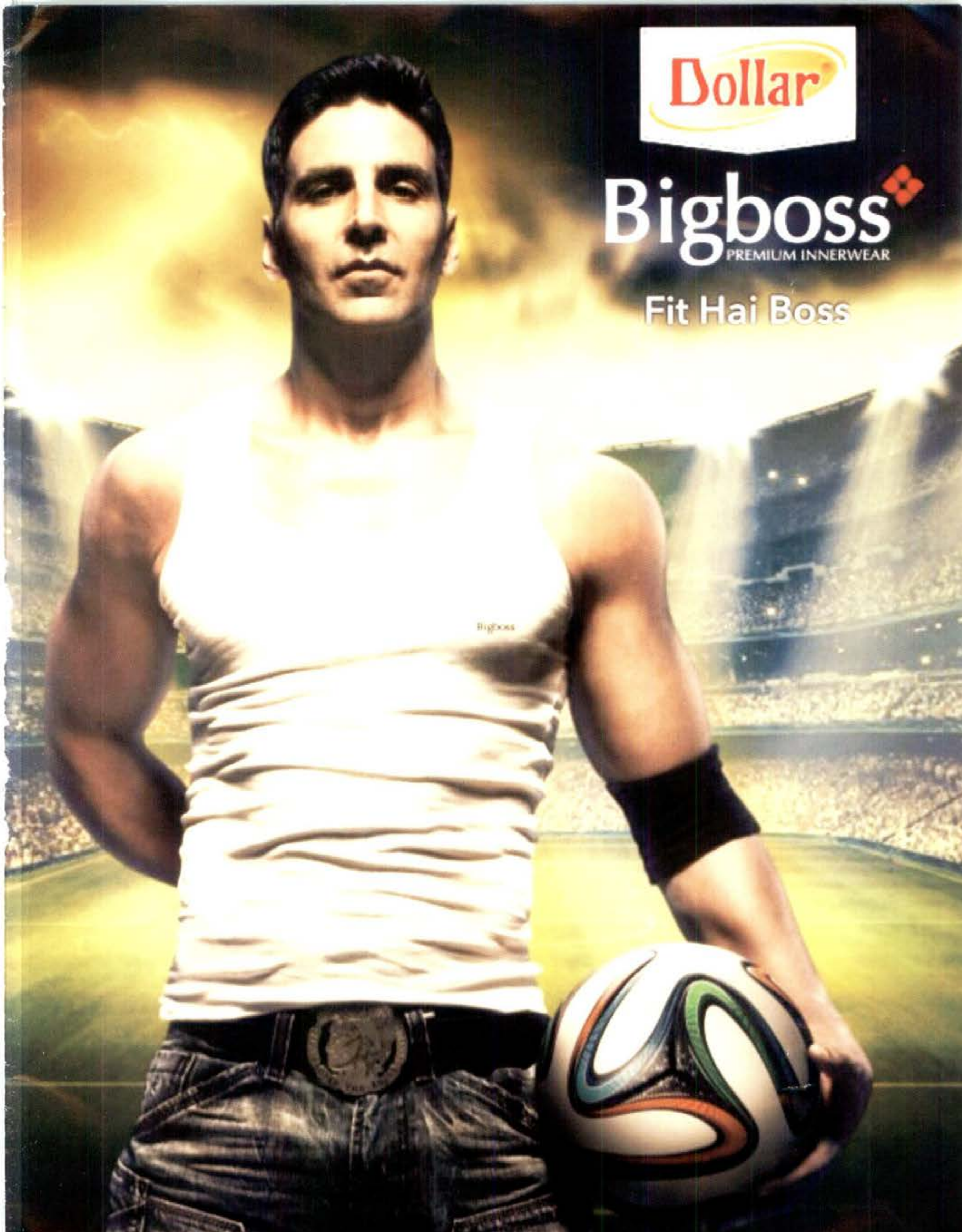
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जो विद्या[illegible] सद्गुणों में गुरुत्व नहीं है, झूठ-[illegible] कंठी, तिलक, वेदविरुद्ध, मन्त्रोपदेश करने वाले हैं, वे गुरु ही नहीं किन्तु गड़रिये जैसे हैं। जैसे गड़रिये अपनी भेड़ बकरियों से दूध आदि से प्रयोजन सिद्ध करते हैं, वैसे ही शिष्यों के, चेले चेलियों के, धन हरके अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं।

\- सत्यार्थप्रकाश
पृ. ३२६

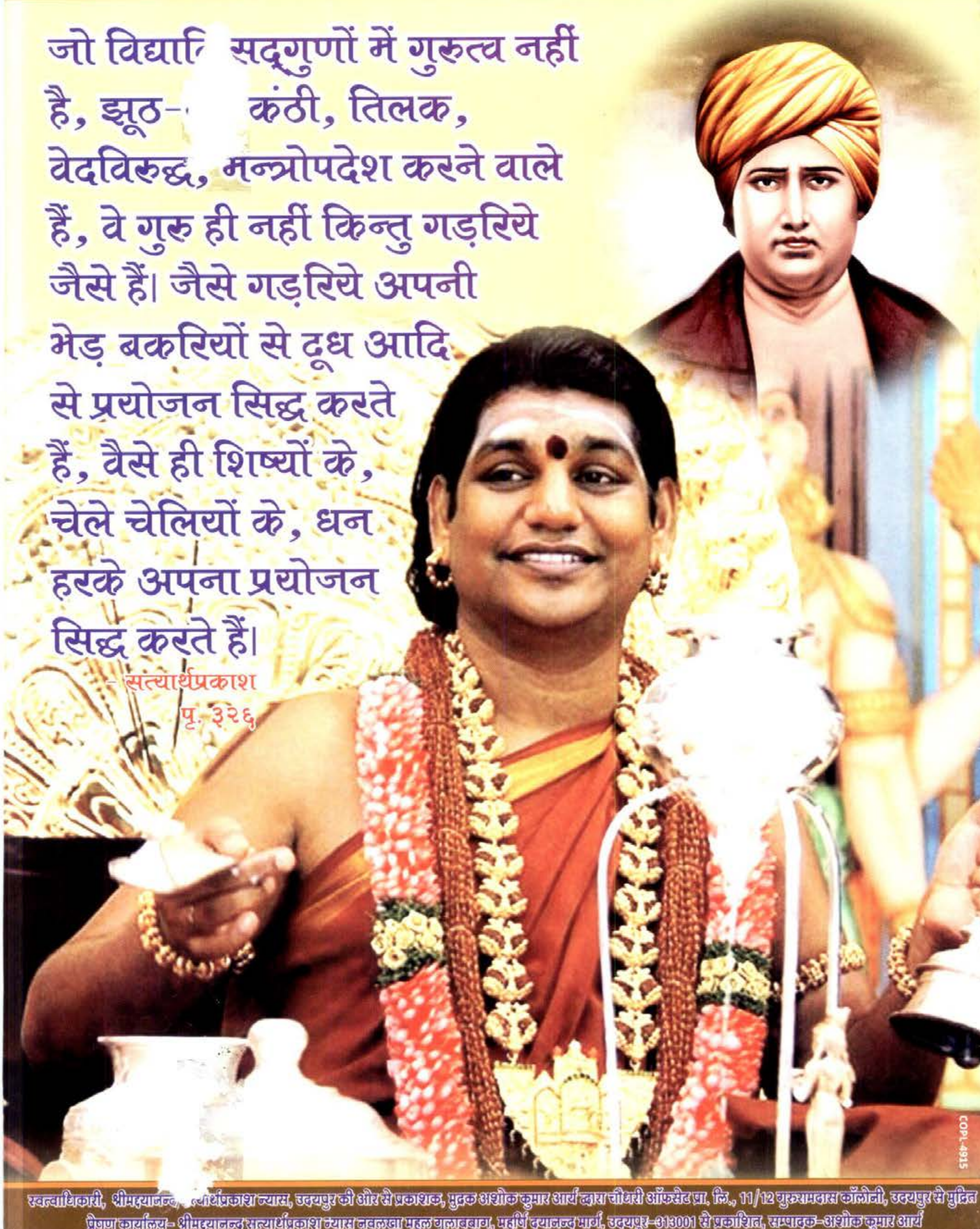

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर